सम्पादकीय
भूलें नहीं इतिहास, प्रगतिशील सोच के साथ हों कुरीतियाँ मिटाने के प्रयास 2

जाग्रत् कर्मठ नारी का आदर्श- मंदोवरी देवी 5

गुरुसत्ता के बोध दिवस-बसंत पर्व पर शिष्यों की भावभरी श्रद्धाञ्जलि 6

रोमांचक संस्मरण
परम पूज्य गुरुदेव भगवान नहीं तो क्या थे ?
- ओम जी अग्रवाल 7

मतदान हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।
- **श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी** 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2022

वर्ष : 34, अंक : 17
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 फरवरी 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

हम राष्ट्र के लिए जीना सीखें

स्वार्थ और संघर्ष नहीं, प्यार, परमार्थ व सहकार से ही सामाजिक शान्ति-समरसता संभव है

असमानता का अभिशाप

किसी शान्त जलाशय में पत्थर फेंकने पर उसमें जल की कई तरंगें, लहरें पैदा होकर जलाशय की शान्ति, गम्भीरता, समता में हलचल पैदा हो जाती है, उसकी स्थिरता भंग हो जाती है। इसी प्रकार गर्मियों में तापक्रम के हेर-फेर से वायुमण्डल का वातावरण कहीं हल्का, कहीं भारी हो जाता है, जिसके कारण आँधी, तूफान, बवण्डर, चक्रवात आदि चलने लगते हैं और वायुमण्डल की एकरसता भंग हो जाती है। ठीक यही नियम मानव समाज के लिए भी है। जब मानव समाज में मतभेद, ऊँच-नीच, स्वार्थवृत्ति, परस्पर अहंभावना पैदा हो जाती है तो आपस में संघर्ष, हलचल, प्रतिक्रिया आदि का प्रादुर्भाव होता है। यही कारण है कि आज बढ़ते हुए राजनीतिक आन्दोलन सवर्ण-दलित संघर्ष, साम्प्रदायिक झगड़े, परिवारिक कलह, भाषा आन्दोलन, प्रान्तवाद, मालिक-मजदूर संघर्ष आदि हमारे देश में कुछ कम मात्रा में व्याप्त नहीं हैं।

अपनी भूल समझें-सुधारें

वर्तमान विसंगतियों का प्रमुख कारण हमारा वास्तविक सत्य को भूलकर गलत धारणाओं को अपनाना है। इन गलत धारणाओं के मूल में हमारी स्वार्थवृत्ति, संकीर्णता, अदूरदर्शिता, अहंकार, पद, प्रतिष्ठा, ख्याति का मोह एवं अविवेक ही है। हमारी

विशाल भारत के नवनिर्माण का दायित्व भारत देश के वासियों के कन्धों पर ही है। समतुल्यता को भंग करने वाले दूषित तत्वों को हटाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। समाज में परस्पर मतभेद, संघर्ष, प्रतिहिंसा, वैमनस्यता आदि को मिटाने एवं राष्ट्रीय एकता को कायम रखने के लिए हमें प्रयास करने ही होंगे। इन दिनों ऋषियों द्वारा प्रणीत सनातन संस्कृति एवं धर्म का अवलम्बन ही श्रेयस्कर होगा, जिसमें न केवल भारतीयों के लिए, वरन् समस्त पृथ्वीवासियों को एक सूत्र में बाँधने का महान् आदर्श निहित है।

संघर्ष, लड़ाई-झगड़े, हिंसा, प्रतिहिंसा-प्रतिशोध आदि का वातावरण पैदा हो जाता है।

आज मानव समाज में तरह-तरह के मतभेद, झगड़े संघर्ष आदि का विषाक्त वातावरण फैल रहा है। सम्प्रदाय, परिवार, जाति, समाज, प्रदेश आदि में परस्पर किसी न किसी रूप में संघर्ष का दूषित वातावरण देखा जा सकता है। समाज में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, जलन, प्रतिशोध आदि के बढ़ते हुए वातावरण के फलस्वरूप हिंसा, शोषण, परपीड़न, लूट, डकैती, धोखाधड़ी, घात, परस्पर अविश्वास एवं असन्तोष की घटनायें प्रायः घटती रहती हैं।

आज हमारे समाज की समतुल्यता भंग हो गई है। हमारे परिवार, समाज एवं राष्ट्र में ऊँच-नीच, योग्य-अयोग्य, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, जाति-पाँति, छूत-अछूत आदि की परस्पर मतभेदपरक दीवारें इस तरह खिंच गई हैं कि हमारी एकता एवं सामूहिकता को विशृंखलित कर दिया है। इन मतभेद की भ्रान्त धारणाओं ने हमारे मस्तिष्क एवं दिलों को इतना संकुचित कर दिया है कि इन्हें हटाना आज काफी मुश्किल हो रहा है।

जब कभी किसी भी राष्ट्र एवं समाज की आन्तरिक समतुल्यता नष्ट हो जाती है तो वहाँ यह कमजोरियाँ हमें ही खाये जा रही हैं। 40 करोड़ (आज की तिथि में 130 करोड़) जनसंख्या की सामूहिक शक्ति कितनी महान होती है, किन्तु खेद है कि एक ही घर में रहते हुए राष्ट्रीय एकता को भूलकर हम राजनीतिक दलों की गलत भूमिका, साम्प्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता, भाषावाद, ऊँच-नीच आदि भेद की दीवारों में घिरकर अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। यह भारत जैसे महान् राष्ट्र के लिए एक घातक एवं खेदजनक परिस्थिति है।

सर्वोत्तम उपाय ऋषि संस्कृति का अवलम्बन

विशाल भारत के नवनिर्माण का दायित्व भारत देश के वासियों के कन्धों पर ही है। समतुल्यता को भंग करने वाले दूषित तत्वों को हटाना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। समाज में परस्पर मतभेद, संघर्ष, प्रतिहिंसा, वैमनस्यता आदि को मिटाने एवं राष्ट्रीय एकता को कायम रखने के लिए हमें प्रयास करने ही होंगे। इन दिनों ऋषियों द्वारा प्रणीत सनातन संस्कृति एवं धर्म का अवलम्बन ही श्रेयस्कर होगा, जिसमें न केवल भारतीयों के लिए, वरन् समस्त पृथ्वीवासियों को एक सूत्र में बाँधने का महान् आदर्श निहित है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा मानव मात्र को एक परिवार सूत्र में बँधे हुए देखने वाले ऋषि-मनीषियों की हृदय तन्त्रियों में से ही झंकृत हुआ। उनके द्वारा विकसित संस्कृति में भेदभाव, परस्पर संघर्ष, प्रतिहिंसा, वैमनस्य, लड़ाई-झगड़े आदि के लिए स्थान नहीं है। हमारे पूर्वज ऋषियों ने ईश्वरीय दिव्य विधान को आत्मसात करके मानव समाज को सन्देश दिया "यह सृष्टि उस परमपिता परमात्मा की है। हम सब उसके बच्चे हैं और परस्पर भाई-भाई हैं। पिता के सृष्टिरूपी घर में हम सभी का समान अधिकार है।" उन दिनों इस सिद्धान्त को अनुभव ही नहीं किया गया, वरन् व्यावहारिक क्षेत्र में भी स्थान दिया गया था। आज हमें ऋषियों के उस व्यापक दृष्टिकोण एवं समानता की उच्च भावनाओं को फिर से अपनाना होगा। इसके लिए परस्पर के स्वार्थों को एक ओर रख देना होगा। 'समानता' के, एकसूत्रता के महान् रहस्य को समझना होगा।

जो केवल अपना ही स्वार्थ लेकर चलता है, वह स्वयं तथा समाज दोनों का ही अहित करता है। जो व्यक्ति समाज को पीछे छोड़कर केवल अपना ही हित सम्पादन करना चाहता है, वह सब से बड़ी भूल करता है। समाज से दूर रहकर किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती। व्यक्ति और समाज का वास्तविक लाभ परस्पर एक-दूसरे के साथ चलने में ही है। यदि कोई व्यक्ति समाज से दूर हटकर स्वार्थपूर्ण भावनाओं से अपना ही मोक्ष, सिद्धि, धन की प्राप्ति आदि चाहता है तो वह उन कृपणों की तरह ही हेय एवं घृणित है, जो अपने ही लिए रात-दिन संग्रह करने में लगे हुए हैं।

जो स्वयं ही जीना चाहते हैं और दूसरों के जीवन की परख नहीं करते, वे राक्षस ही हैं। जो स्वयं जीकर अपने साथ-साथ दूसरों के जीवन से भी प्रेम करते हैं, वे सच्चे मनुष्य हैं। और जो केवल दूसरों के लिए ही जीते हैं, वे सचमुच देवता ही हैं। वे परमार्थी व्यक्ति भगवान की ही साकार प्रतिमा तुल्य हैं।

अपने स्वार्थों को हटाने के साथ विषम दृष्टि को भी हटाना आवश्यक है। कोई भी छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच नहीं है। समानता के महान् सत्य की अनुभूति ऋषियों ने बहुत पहले ही प्राप्त की थी। यही कारण था कि उन्होंने मानव में ही नहीं, वरन् प्राणिमात्र में अपनी आत्मीयता का अनुभव किया था। उसी को अब हमें अनुभव एवं व्यवहार में लाना है।

प्रकृति भेद, गुण, परमाणुओं की बनावट, स्वभाव आदि का परस्पर कुछ भेद हो सकता है, किन्तु मूल में तो सब ही समान हैं। अतः ब्रह्म भेद होते हुए भी परस्पर स्नेह एवं समता, अनैतिकता में भी एकता ढूँढ़ने की आवश्यकता है।

हमें अपनी संकीर्ण भावनाओं एवं स्वार्थपूर्ण संघर्षात्मक प्रवृत्तियों आदि को दूर हटाना होगा ताकि हममें परस्पर खिंची हुई भेद की दीवारें तोड़ी जा सकें। हमारी सामूहिक शक्ति पुनः जाग्रत् हो उठे। मानव-मानव को भाई के नाते गले लगाना होगा। समाज में समतुल्यता कायम करनी होगी। समाज को साथ लेकर ही हम प्रगति, उत्थान, मोक्ष आदि का प्रयत्न करें। राष्ट्रीय संगठन की सत्प्रवृत्ति को कार्यान्वित करने से ही 'स्वर्गादपि गरीयसी' यह भारत भूमि पुनः अपने महान् गौरव को प्राप्त कर सकेगी। हम पुनः एक सूत्र में बँधकर राष्ट्र के महान् भविष्य का निर्माण करें।

वाङ्मय खण्ड 46 (भव्य समाज का अभिनव निर्माण), पृष्ठ 4.44 से संकलित, सम्पादित

अब जब चाहें तब सरलता से चुनें, सुनें, देखें

- परम पूज्य गुरुदेव, परम वन्दनीया माताजी,
- श्रद्धेय डॉक्टर साहब, श्रद्धेया जीजी,
- डॉ. चिन्मय जी एवं शेफाली जी के वीडियो संदेश
- सामयिक प्रेरणाएँ, संदेश
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ

भूलें नहीं इतिहास, प्रगतिशील सोच के साथ हों कुरीतियाँ मिटाने के प्रयास

विचार क्रांति के अग्रदूतों को तो हर हाल में अवांछनीय परंपराएँ बदलनी ही चाहिए

जब भी देश की प्रतिगामिता या परतंत्रता के कारणों की चर्चा होती है तो एक दृष्टांत अक्सर सुनने में आता है, महमूद गजनी द्वारा सोमनाथ मंदिर के लूटे जाने का। कहा जाता है कि मुट्ठीभर आक्रांता आए और हमारे असंगठित, स्वार्थी समाज की कमजोरियों का फायदा उठाकर न केवल वैभवशाली मंदिर को लूट कर ले गए, बल्कि हमारी संस्कृति को ऐसी चोट दे गए जिसकी कसक आज तक भी अनुभव होती है। कहते हैं कि उस समय के पुरोहित छोटी-छोटी मूढ़ मान्यताओं में ही फँसे हुए आपस में झगड़ते रहे और अंधश्रद्धालु समाज उनका अनुगमन करता रहा। परम पूज्य गुरुदेव कहते थे कि उस समय लोग एक-एक मुट्ठी धूल भी उन आक्रांताओं पर फैंक देते तो वे वहीं दब कर मर जाते, लेकिन स्वार्थ और अहंकारवश समाज ने सामाजिक हितों की अनदेखी ही की।

आज भी हमारे समाज की स्थिति वैसी ही दिखाई देती है। इतनी बड़ी जनसंख्या वाला देश, ज्ञान और संस्कृति की सम्पदा से विश्व का सर्वाधिक सम्पन्न देश विकासशील देशों की पंक्ति में खड़ा है, जबकि हमसे बहुत दिनों बाद आजाद हुए छोटे-छोटे देशों ने आश्चर्यजनक प्रगति कर ली है। जापान ने न जाने कितने थपेड़े सहे हैं, वह प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होता ही रहता है, लेकिन वहाँ के नागरिकों की प्रगतिशील सोच, श्रमशीलता, उत्कर्ष के लिए प्रतिबद्धता ने हर परिस्थिति से उसे उबारा, आगे बढ़या है।

भारत के पिछड़ेपन के अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन देखा जाए तो उनमें सबसे बड़ा कारण पूरे देश में व्याप्त कुरीतियाँ और अंधविश्वास हैं। जीवनयापन की आवश्यकताएँ बहुत सीमित हैं। उसके लिए देश में संसाधनों की कमी आज भी नहीं है, लेकिन तरह-तरह की कुरीतियों के कारण हमारे देश में धन की जो बर्बादी होती है, वह देश के विकास में लगने लगे तो हमारा देश आज भी सारे विश्व का सिरमौर बन सकता है। गहराई में जाकर देखा जाए तो पता चलता है कि अंधविश्वास और कुरीतियाँ हमारे देश को दीमक की तरह खोखला कर रही हैं।

भारत में प्रायः हर समाज, हर वर्ग में कुरीतियों की भरमार है। नेग, दहेज एवं आडम्बरयुक्त खर्चीले विवाह, मृतकभोज, फैशनपरस्ती, श्रम से परहेज, विकसित देशों के अंधानुकरण की झूठी शान, नशा, अश्लीलता जैसी कुरीतियाँ ऐसी हैं, जिनका साम्राज्य बहुत बड़ा है। ढेरों ऐसी परम्पराएँ हैं जिनका अविवेकी मनुष्य समुदाय बिना किसी सोच-विचार के अंधानुकरण करता चला जा रहा है। इनके विरुद्ध परम पूज्य गुरुदेव ने सशक्त लेखनी चलाई और बुलंदी से आवाज उठाई है। इन्हें गति देने की आवश्यकता है।

होली समीप है। यह बुराइयों पर अच्छाई की विजय के पर्व के रूप में मनाई जाती है। अखिल विश्व गायत्री परिवार भी होली पर्व पर नशा एवं अश्लीलता के विरुद्ध विशेष जनजागरण अभियान चलाता रहा है, इस वर्ष भी यह अभियान चलेगा। पर्व भी भरपूर उमंग और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। इस विशिष्ट वेला में समग्र कुरीतियों को दूर करने के लिए हमारे संकल्प उभर सकें तो यह समाज और देश की बड़ी सेवा होगी। कम से कम विचार क्रान्ति के अग्रदूतों को तो यह पहल करनी ही चाहिए।

अवांछनीयताएँ और कुरीतियाँ

पर्व, उत्सव, संस्कार भारत देश की सामाजिक संरचना के ताने-बाने हैं। यह न हों तो समाज नीरस हो जाएगा। यह तो हमारी शिक्षण परम्परा का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। समाज को नैतिकता और स्वानुशासन में रखने में इन पर्व, त्यौहारों, संस्कारों की उत्कृष्ट भूमिका रही है। अवांछनीयताएँ और कुरीतियाँ तो इन्हें मनाते समय शान-शौकत की अनगढ़ होड़ एवं अविवेकपूर्ण अंधानुकरण के कारण पनपती तथा समाज को भारी नुकसान पहुँचाती हैं। परम पूज्य गुरुदेव का कथन है कि हमारे पर्व, त्यौहार, संस्कार सादगीपूर्ण हों, शिक्षण प्रधान हों, इनमें फिजूलखर्ची बिल्कुल न की जाय, तभी वे समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन आज तो बात ही कुछ और है।

विवाहोन्माद बढ़ता ही जा रहा है।

- आज मध्यमवर्गीय परिवार के विवाह का खर्च भी करोड़ों में पहुँच रहा है। बहुत-से लोग तो इस मानसिकता से मजूबर हैं कि यदि बेटे-बेटी का विवाह धूमधाम से नहीं किया गया तो उसका प्रभाव परिवार के अन्य बच्चों के विवाहों पर होगा। यह उनके लिए विवाह संस्कार ही नहीं, अपनी हैसियत के प्रदर्शन का समारोह बन जाता है।
- कानूनी दृष्टि से दहेज लेना भले ही अपराध हो गया हो, लेकिन बिना दहेज के बेटी का विवाह हो जाना आज भी एक चुनौती है।
- विवाहों में पकवानों की होड़-सी लगी हुई है। कई विवाहों में तो इतने पकवान होते हैं कि लोग खाना और चखना तो दूर, उन्हें देख तक नहीं पाते। ऐसे अविवेकपूर्ण दिखावे से अन्न की बर्बादी होना स्वाभाविक ही है। एक ओर भारत में आज भी लगभग 10 करोड़ लोगों को दो वक्त की रोटी भी ठीक से नहीं मिल पाती, दूसरी ओर ऐसे दिखावे को उचित कैसे ठहराया जा सकता है?
- टैण्ट, सजावट, लाइटिंग पर बेशुमार दौलत निरर्थक ही उड़ाई जा रही है।
- वेश कीमती परिधानों और कपड़ों के लेन-देन की परम्पराओं पर ढेरों खर्च होता है। इनमें से अधिकांश ऐसे होते हैं जो सामान्य जीवन में उपयोग के ही नहीं होते।
- विवाह-समारोहों में उपस्थित होना प्रसन्नता से अधिक सामाजिक व्यवहार का रूप बन गया है। इससे आने वालों की अनावश्यक संख्या और अनावश्यक खर्च बढ़ रहा है। दूसरी ओर आने वालों को भी अपने समय, धन, साधन खर्च करने के लिए विवश होना पड़ रहा है।

आवांछनीयताएँ

हमारा देश और समाज विविधताओं से भरा है। हर क्षेत्र की अपनी-अपनी लोक परम्पराएँ हैं, जिनका बड़े उत्साह के साथ पालन किया जाता है। प्रेरणाप्रद लोक परंपराओं का निर्वाह होता रहे इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन देखा जाता है कि अधिकांश कर्मकाण्ड और लोक परम्पराएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें मात्र परम्परा कहकर ढोया जा रहा है। इनके विषय में जब यह पूछा जाता है कि ऐसा क्यों, यह किसलिए? तो उसका किसी के पास उत्तर नहीं होता। अंधविश्वासी समाज यह मानता है कि यह परम्परा नहीं अपनाई गई तो हमारा संस्कार अधूरा ही रह जाएगा।

विवेकपूर्वक सोचिए

देश में आज भी लाखों लोगों को भूखे पेट सोना पड़ता है। न जाने कितने परिवार खुले आसमान के नीचे रात गुजारने के लिए मजबूर हैं। दूसरी ओर विवाहों में इतना धन बर्बाद हो रहा है कि एक विवाह के व्यर्थ खर्च का ही सही उपयोग हो तो एक-दो या कई गरीबों का घर बस सकता है। एक विवाह का व्यर्थ खर्च बचाकर एक नौजवान अपना रोजगार खड़ा कर सकता है। विवेकपूर्वक सोचिए कि परम पूज्य गुरुदेव जिसे 'तीन दिन का सत्यानाशी उन्माद (प्रचलित विवाह परम्परा)' कहा करते थे, वह बेहतर है या बेसहारों का सहारा बनने की जीवनभर की गौरवानुभूति?

आवश्यकता धन, समय आदि की बर्बादी को रोकने एवं उन्हें समाजोत्थान में लगाने की है, लोक परम्पराओं के नाम पर जो मूढ़ मान्यताएँ स्थापित हो गई हैं और आज के समय में अनुपयोगी हैं, उनसे मुक्ति पाने की है। विवाह हो, मरणोत्तर संस्कार अथवा मुण्डन, यज्ञोपवीत या कोई अन्य संस्कार; हर क्षेत्र में इनकी अलग-अलग परम्पराएँ हैं, अलग-अलग मान्यताएँ हैं। यदि विवेकपूर्वक एवं प्रेरणाप्रद ढंग से उन्हें सम्पन्न किया जाए तो सभी श्रेष्ठ हैं। हमें पर्व, उत्सव, संस्कार, त्यौहारों की आत्मा को, उनकी प्रेरणाओं को प्राणवान बनाना है। उनके पीछे जो भोंडा प्रदर्शन और अपव्यय होता है, उससे समाज को मुक्त कराना है। आज के समय और परिस्थितियों को देखते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने पर्व, त्यौहार और संस्कारों की परम्परा का जो आदर्श स्वरूप प्रचलित किया है, यदि वह समाज में स्थापित हो जाए तो देश का कायाकल्प हो जाए।

जरा विवेकपूर्वक सोचिए :

- कोरोना काल में सीमित लोगों में और सीमित साधनों में विवाह आदि संस्कार हो सकते हैं तो देश और समाज के हित में यह एक सामान्य परम्परा क्यों नहीं बन सकती?
- कभी शादी-ब्याह कई-कई दिनों के हुआ करते थे। अब परिस्थितियाँ बदली हैं तो एक दिन में ही सारे कर्मकाण्ड करा लेने की परम्परा बनती जा रही है। इसी प्रकार के विवेकपूर्ण परिवर्तनों से संस्कारों को सादगीपूर्ण क्यों नहीं बनाया जा सकता?
- संस्कार तो दिन में ही संभव है, रात्रि में तो अधिकतर विवाहोन्माद ही दिखाई देता है। समय की प्रतिकूलता के कारण संस्कार में गिने-चुने लोग ही शामिल हो पाते हैं। जो होते हैं, वे भी पुरोहितों से केवल चिह्नपूजा कर संस्कार की औपचारिकता पूरी करने का आग्रह करते दिखाई देते हैं। दिन में विवाह हो तो विद्युत, सजावट एवं कई अन्य व्यवस्थाओं का भारी खर्च स्वतः ही कम हो जाता है। समझदारी तो दिन में विवाह करने में ही है।
- सीमित संख्या में स्वादिष्ट पकवानों से भी अतिथियों का स्वागत संभव है। बड़प्पन की होड़ में अपव्यय क्यों?

अपनी ही नहीं, औरों की भी सोचें

बड़प्पन की होड़ को रोका ही जाना चाहिए। संस्कारों को उनकी गरिमा के अनुरूप ही सम्पन्न किया जाना चाहिए। जीवनभर की कमाई को मात्र एक समारोह में व्यतीत कर देना कहाँ की समझदारी है? परम पूज्य गुरुदेव का एक चर्चित सद्वाक्य है- **''खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बना देती हैं।''** बात सोलह आने सच है। बेटी के विवाह के लिए धन एकत्रित करना, सामान्य जीवनयापन से कहीं अधिक संघर्षदायक है।

जरा सोचिए, समर्थों के आयोजन एक परम्परा का रूप ले लेते हैं, जो असमर्थों की मानसिकता को भी अनुसरण करने के लिए विवश करती है। ऐसे में एक ईमानदार व्यक्ति इतना धन कहाँ से जुटाएगा? वह बेईमानी, भ्रष्टाचार की ओर तो बढ़ेगा ही। अभी अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार, परिवार के आधार पर अच्छे रिश्ते मिल पाना सबके लिए संभव कहाँ हो पाता है? अधिकांश लोगों पर दहेज-दिखावे का भूत सवार दिखाई देता है।

वर्तमान समय की संभावनाएँ

गायत्री परिवार कुरीतियों के विरुद्ध निरंतर जनजागरण अभियान चला रहा है और समाज पर उसका बहुत सकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है, लेकिन अवांछनीयताओं के निवारण पर्व पर इस दिशा में और भी चिंतन-मनन होना चाहिए। कम से कम विचार क्रान्ति के अग्रदूतों को तो हर हाल में अवांछनीय परम्पराओं को बदलने का संकल्प ले ही लेना चाहिए। बेटे और बेटी के विवाह में दोहरे मापदण्ड न रखकर हमें पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए।

हमारे समाज में कुरीतियों और अंधविश्वासों की जड़ें बहुत गहरी हैं। इन्हें सतत प्रयासों से ही उखाड़कर फैंका जा सकता है। ऐसे प्रयास संभव हैं-

- अनेक समाजों में सामूहिक आदर्श विवाहों का प्रचलन बढ़ रहा है। इन्हें प्रोत्साहित करने और ऐसे वैवाहिक कार्यक्रमों का प्रचलन बढ़ाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।
- देखा जाता है कि सामज और परिवार के सदस्यों की इच्छाएँ आदर्शों के अनुगमन में बहुत बड़ी बाधा बनकर खड़ी हो जाती हैं। इस मानसिकता को बदलने के लिए सतत प्रयास होने चाहिए। सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों की निरर्थकता सिद्ध करने के लिए सभा-सम्मेलनों का आयोजन होते रहना चाहिए। इनमें हर वर्ग के विद्वानों को आमंत्रित कर उनके विचारों के परिष्कार के प्रयास किए जाने चाहिए।
- इन दिनों गायत्री परिवार के यज्ञीय कार्यक्रमों की श्रृंखला पुनः चल पड़ी है। इन कार्यक्रमों में एक सम्मेलन कुरीतियों-अंधविश्वासों के निवारण के लिए भी रखा जा सकता है।
- क्षेत्रीय स्तर पर भी सार्वजनिक कार्यक्रमों में तरह-तरह की सामाजिक बुराइयों की चर्चा करते हुए इसके विरुद्ध जनमानस तैयार करना चाहिए।
- जहाँ भी प्रयास किए गए, क्षेत्रीय पुरोहितों ने परम पूज्य गुरुदेव की संस्कार परम्परा को सराहा है। सभी पुरोहितों तक अपनी संस्कार परम्परा की जानकारी पहुँचाने की आवश्यकता है, ताकि वे अपने कार्यक्रमों में सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध विचार रख सकें। संभव हो तो क्षेत्रीय पुरोहितों का प्रशिक्षण सत्र भी शक्तिपीठों पर आयोजित किया जाए।

विवाह, मृतकभोज ही नहीं, ऐसी अनेक कुरीतियाँ हैं जो समाज को काट और बाँट कर अपने देश और संस्कृति को भारी नुकसान पहुँचा रही हैं। यह समाज की विकृत सोच का ही परिणाम है। समाज के स्वस्थ विकास के लिए इस सोच को बदलना नितांत आवश्यक है। इनकी चर्चा अगले अंक में।

समाज के उत्थान के लिए जाग्रत् संवेदना, किए गए प्रशंसनीय प्रयास

गोसेवा, स्वास्थ्य संवर्धन एवं ग्रामोत्थान की विशाल योजना

बसंत पर्व पर संस्थान की भूमि पर पंच कुण्डीय यज्ञ एवं अपने छत्तीसगढ़ प्रवास के समय केन्द्र का निरीक्षण करने पहुँचे डॉ. चिन्मय जी

बैसपाली, रायगढ़। छत्तीसगढ़

बैसपाली में गायत्री-गोसेवा साधना संस्थान (योग एवं पारंपरिक चिकित्सा शोध केन्द्र) की स्थापना होने जा रही है। गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट बैसपाली, रायगढ़ द्वारा ग्रामोत्थान की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से रायगढ़ जिले के हर गाँव को गायत्रीमय बनाने की योजना बनी है और 13 फरवरी 2022 से उसका क्रियान्वयन भी आरम्भ हो गया है। इससे पूर्व बसंत पंचमी-5 फरवरी 2022 को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के शुभाशीषों के संग आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने केन्द्र की वेबसाइट और वहाँ चलने वाले साधना सत्रों का शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन उद्घाटन किया। बैसपाली में पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ लगभग 200 कार्यकर्त्ता इस कार्यक्रम से जुड़े थे।

आगामी एक वर्ष में जिले के सभी 1500 गाँवों का मंथन होगा

इस संस्थान में योग एवं पारंपरिक चिकित्सा के विविध प्रकल्पों-प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद, एक्यूप्रेशर, पंच तत्त्व चिकित्सा आदि की व्यवस्था बन रही है। यह परंपरागत उपाय-उपचारों के माध्यम से शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य की दिशा में एक बड़ी पहल होने जा रही है। आवश्यकतानुरूप एक शोध केन्द्र एवं आवासीय साधना स्थली, यज्ञशाला, समाधि स्थल आदि का विकास विस्तार किया जाएगा।

वैसे तो स्थानीय गायत्री परिवार के परिजन सन् 2006 से ही इस केन्द्र पर गोसेवा एवं मिशन की अन्य गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं। उनके द्वारा 300 बूढ़ी गायों और बछड़े-साँडों की सेवा की जा रही है। लेकिन भूमि पंजीयन सहित समग्र शासकीय कार्यवाहियों के बाद आगामी माघ पूर्णिमा-3 से 6 फरवरी 2023 को भावी समग्र जनजागरण की योजना की आवश्यकता के अनुरूप नए विशाल भवन के भूमिपूजन एवं शिलान्यास का कार्यक्रम रखा गया है, जो 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न होगा। इससे पूर्व जिले के सभी 9 ब्लॉक के 1500 गाँवों के मंथन की योजना बनी है। यह संस्थान क्षेत्रीय सभी सक्रिय एवं कर्मठ परिजनों के प्रयास-पुरुषार्थ एवं संकल्प का ही सत्परिणाम है।

कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

- मुख्य स्थान साढ़े तीन एकड़ भूमि में है, लेकिन प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने इस क्षेत्र का विस्तार करने का संकल्प लिया है।
- गौसंवर्धन, स्वावलम्बन, ग्राम्य विकास एवं ग्रामोत्थान की समग्र योजनाओं के लिए भूमि की कमी न पड़े, ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं।
- 5 फरवरी 2023 का भूमिपूजन-शिलान्यास 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ होगा।
- आगामी फरवरी माह के उक्त कार्यक्रम तक जिले के सभी 9 ब्लॉक के 1500 गाँवों में जनजागरण-आमंत्रण के कार्यक्रम होंगे।
- हर गाँव में सप्त आन्दोलनों की सक्रियता का संदेश दिया जाएगा।
- प्रत्येक गाँव का हर साधक अपने गाँव से 2-2 ईंट अपनी साधना की पूर्णाहुति स्वरूप समर्पित करेगा।
- समीपवर्ती 108 गाँवों को 108 कुण्डीय यज्ञ में एक-एक कुण्ड आबंटित किया जाएगा।

समग्र योजना एवं जानकारी वेबसाइट (www.ggsss.in) पर देखें।

मरणोत्तर संस्कार की आदर्श परम्परा अपनाई

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह सहित अनेक मंत्री-अधिकारी शामिल हुए

होशंगाबाद। मध्य प्रदेश

ग्राम चांदोन, तहसील पिपरिया के भाजपा किसान मोर्चा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री दर्शन सिंह चौधरी ने गायत्री शक्ति पीठ के ट्रस्टी श्री उमेद सिंह पटेल की प्रेरणा से अपने पूज्य पिताजी स्व. नारायण सिंह चौधरी का मृत्यु भोज न कर यज्ञ के साथ श्रद्धांञ्जलि कार्यक्रम सम्पन्न किया। माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने सपत्नीक यज्ञ में भाग लेकर दिवंगत आत्मा की शान्ति-सद्गति के लिए आहुतियाँ समर्पित कीं। गायत्री परिवार के पं. सुबोध बारोलिया ने समाज को प्रगतिशील परम्पराओं के साथ संस्कार कराने, धन का सदुपयोग समाज के उत्थान में करने की प्रेरणाएँ दीं।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह सपत्नीक यज्ञ करते हुए

कार्यक्रम में श्री कमल पटेल कृषि मंत्री, उर्जा मंत्री, किसान मोर्चा राष्ट्रीय महामंत्री, प्रदेश स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी, पर्यटन विकास निगम अध्यक्ष, निर्धन वर्ग कल्याण आयोग के अध्यक्ष शिव चौबे, सांसद राव उदय प्रताप सिंह, विधायक सीताशरण शर्मा, पिपरिया विधायक ठाकुर दास नागवंशी, सोहागपुर विधायक, बिजयपाल इत्यादि गणमान्य एवं वरिष्ठ अधिकारियों सहित 2000 से अधिक लोग गायत्री परिवार की प्रेरणाओं से लाभान्वित हुए।

उपस्थित गणमान्यों सहित अधिकांश लोगों ने मृतक भोज बन्द करने की प्रेरणा का समर्थन किया। पूज्य गुरुदेव का साहित्य (1000 पॉकेट बुक) बाँटी गईं। दिवंगत आत्मा की स्मृति में आधा एकड़ जमीन पर वृक्षारोपण किया गया। गाँव में वाचनालय के लिए कमरा बनाकर देने की घोषणा की गई।

पक्षियों के लिए पानी के बर्तन और घोंसले बाँटे

आणंद। गुजरात

ग्रीष्म ऋतु दस्तक देने लगी है। गर्मी में मनुष्य तो अपने लिए पानी, एसी, कूलर जैसी कई व्यवस्थाएँ कर लेता है लेकिन मूक पशु-पक्षियों को भारी परेशानी झेलनी पड़ती है। गायत्री परिवार ट्रस्ट आणंद और गायत्री जनसेवा केन्द्र, पर्थ (ऑस्ट्रेलिया) ने निरीह पक्षियों के संग सहृदयता का परिचय देते हुए चिड़ियों के लिए कृत्रिम घोंसले (गत्ते के बॉक्स) और पानी के कुण्डे निःशुल्क बाँटने की पहल की। गायत्री ज्ञान प्रचार केन्द्र के सहयोग से 1000 घोंसले और पानी के बर्तन बाँटे गए।

लोगों को गत्ते के घोंसले देते गायत्री परिवार के परिजन

बंदियों के सुधार-परिष्कार के लिए किए जा रहे हैं प्रयास

सागर, सतना और रायसेन के कारागारों में गायत्री मंत्र बॉक्स लगाए गए।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में भी हो रही है स्थापना।

कारागार के अधिकारियों को मंत्र बॉक्स भेंट करते परिजन

सागर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार बुधनी द्वारा 1 फरवरी 2022 को केन्द्रीय कारागार सागर के वातावरण में सकारात्मकता, शान्ति, सद्भाव संवर्धन के प्रयास किए गए। इसके अन्तर्गत कारागार में गायत्री मंत्र बॉक्स स्थापित किए गए और गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ बंदियों को दी गईं। कारा अधीक्षक के माध्यम से बंदियों को 'हारिए न हिम्मत' जैसी पुस्तकें दी गईं।

गायत्री परिवार के परिजन ने बताया कि कारागार के वातावरण का बंदियों की मानसिकता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। वातावरण में साधना, सात्विकता, सद्विचारों को बढ़ावा दिया जाए तो उनकी प्रवृत्तियाँ बदल सकती हैं। कार्यक्रम के समय कारा अधीक्षक श्री रामलाल सहलाम, विनीता प्रशान्त खण्डेलवाल, इंद्रपाल सिंह राय, योगेश शांडिल्य, रामकुमार चौरसिया आदि उपस्थित थे।

इसी तरह की स्थापना केन्द्रीय कारागार सतना और जिला कारागार रायसेन में भी की गई हैं।

गायत्री परिवार बुधनी एवं रेहटी शाखा द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रेहटी में भी मंत्र बॉक्स स्थापित किए गए, जिन्हें मंद-मंद ध्वनि में बजाया जाता है। परिव्राजक श्री प्रेमलाल कुशवाहा ने बताया कि गायत्री मंत्र स्वास्थ्य केन्द्र के वातावरण को बदल कर पीड़ितों की आत्मिक शक्ति को बढ़ाने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

गायत्री परिवार इटारसी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अस्पताल में मंत्र बॉक्स स्थापित किए।

कारागार में सद्वाक्य लेखन

राँची। झारखण्ड : गायत्री परिवार के विचार क्रांति अभियान के अंतर्गत बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागार, राँची के परिसर में सद्वाक्य लेखन किया गया। वहाँ गायत्री परिवार के पेंटर श्री दुर्गा साहू द्वारा 77 सार्वजनिक जगहों पर व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण सम्बन्धी सद्वाक्य लिखे गए।

इन वाक्यों से 3600 पुरुष एवं महिला बंदी लाभान्वित हो रहे हैं। वे सभी बहुत प्रभावित हुए। कारागार परिसर स्थित विद्यालय के शिक्षक ने स्वयं चयन कर शिक्षा सम्बन्धी वाक्य लिखवाये। टीपूदाना, राँची के एक बंदी ने कहा कि तीन माह बाद रिहाई के बाद वे अपने क्षेत्र में भी गायत्री परिवार से दीवार लेखन कराएँगे। कारागार परिसर में मनाए गए बसंतोत्सव में कारा अधिकारियों, बंदियों ने इन सद्वाक्यों की भरपूर सराहना की।

स्टेडियम की दीवारों पर

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक एवं विचार क्रान्ति (सद्वाक्य लेखन) अभियान संयोजक गायत्री शक्ति पीठ, धुर्वा, राँची से सम्बद्ध श्री दीपक दयाल प्रसाद ने बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत अब तक 25 सार्वजनिक स्थानों की दीवारों पर 1137 सद्वाक्य लिखे जा चुके हैं। कारागार से पूर्व राँची स्थित अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, धुर्वा दक्षिण और पश्चिम बाउंड्री पर अनुमति लेने के बाद कुल 50 सार्वजनिक जगहों पर सद्वाक्य लिखे गए।

तीर्थ क्षेत्र की स्वच्छता और परस्पर आत्मीयता विस्तार

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

कादीपुर के पवित्र क्षेत्र विजेथुआ महावीरन धाम में गायत्री परिवार द्वारा हर वर्ष स्वच्छता-श्रमदान किया जाता है। इस वर्ष भी जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह के नेतृत्व में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्रम और सफाई के प्रति निष्ठा के साथ कार्यकर्त्ताओं में आत्मीयता संवर्धन-सहभोज की दृष्टि से भी यह कार्यक्रम बहुत उपयोगी और उत्साहवर्धक होता है। इस वर्ष के कार्यक्रम में सर्जन डॉ. ए.के. सिंह, ब्लड बैंक प्रभारी डॉ. आर. के. मिश्रा, बलिया से आए डॉ. अजीत ने श्रमदान करते हुए कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। गोमती मित्र मण्डल के मल्हीपुर, लंभुआ, रामगंज, कुड़वार, बेला पश्चिम आदि स्थानों से आए कार्यकर्त्ताओं और गायत्री परिवार के सभी कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया।

विजेथुआ महावीरन धाम की सफाई करते परिजन

बसंत पर्व पर 24 लोगों ने रक्तदान किया

उज्जैन। मध्य प्रदेश

वसंत पर्व के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर 6 फरवरी को जिला अस्पताल की रक्तदान टीम के सहयोग से 24 लोगों ने रक्तदान किया। गहोई वैश्य समाज तथा उज्जैन पॉलिटेक्निक कॉलेज के युवा भी इसमें शामिल हुए। उपजोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने बताया कि अधिकांश लोगों ने पहली बार रक्तदान किया था। गायत्री शक्तिपीठ पर उन सभी का अभिनंदन कर उत्साहवर्धन किया गया।

बच्चों के भविष्य निर्माण में माताओं का स्थान सर्वोपरि -निर्मला चौधरी

बैतूल बाजार। मध्य प्रदेश

माता प्रथम गुरु होती है। माताएँ ही बच्चे के भविष्य का निर्धारण करती हैं। **बच्चा माता के गर्भ में ही बहुत कुछ सीख** लेता है। अतः शिशु के मनचाहे विकास के लिए माता के गर्भकाल से ही शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

मातृ सम्मेलन

बैतूल में जिला महिला प्रकोष्ठ संयोजिका श्रीमती निर्मला चौधरी, मुलताई ने डिवाइन हायर सेकेंडरी स्कूल बैतूल बाजार में आयोजित 'मातृ सम्मेलन' को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए उक्त बातें कहीं। सम्मेलन में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की माताओं सहित नगर की सैकड़ों गणमान्य महिलाएँ उपस्थित थीं।

मातृ सम्मेलन का शुभारंभ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती, अहिल्या बाई होलकर, रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गाँधी एवं मदर टेरेसा के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। अपने स्वागत उद्बोधन में स्कूल संचालक अजय पवार ने बताया कि बच्चे देश का भविष्य हैं। अतः बच्चों का स्वस्थ निर्माण राष्ट्र के निर्माण में बड़ा योगदान है।

श्रीमती शैल गीद ने कहा कि बच्चे हमारा अनुसरण करते हैं इसलिए हमें ऐसे आचरण करना चाहिए। श्री उमेश वर्मा आचार्य ने कहा कि माताओं की बातें जीवन भर प्रेरणा देती रहती हैं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में पूर्व टीचर ट्रेनर श्री एस.सी. हजारे ने कहा कि जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके पीछे उनकी माताओं की शिक्षा काम करती रही है। गांधी जी को माता पुतली बाई, शिवाजी को माता जीजाबाई की शिक्षा ने महान बनाया।

माताओं की शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ हुईं। बच्चों ने नृत्य-नाटिकाओं से कन्या भ्रूण हत्या, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, पौधरोपण, मोबाइल के दुरुपयोग से बचें जैसे विषयों पर मार्मिक संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन स्कूल समन्वयक व आकाशवाणी के उद्घोषक श्री प्रभाकर वाधोने ने किया।

बहुत लोकप्रिय है बसंत पंचमी पर्व से आरम्भ हुआ सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ एवं प्रशिक्षण

पिसेगाँव में प्रशिक्षण देती श्री प्राणेश विश्वास की टोली

इस प्रकार के सामूहिक यज्ञ प्रशिक्षण का क्रम अब लगभग प्रतिदिन अलग-अलग गाँवों में चल रहा है।

पिसेगाँव, दुर्ग। छत्तीसगढ़

सृजनशील युवा/महिला मंडल द्वारा श्रीराम स्मृति उपवन, पिसेगाँव में 108 वेदीय सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें 20 गाँवों के महिला पुरुष एवं युवाओं ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ में सूक्ष्म यज्ञ को घर-घर गायत्री, घर-घर यज्ञ अभियान के विसतार का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग बनाया जा रहा है। इस तरह के सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ प्रयोग एक तरह से सूक्ष्म यज्ञ प्रक्रिया के प्रशिक्षण होते हैं। पिसेगाँव के सामूहिक प्रयोग का प्रशिक्षण सूक्ष्म यज्ञ केन्द्र बघेरा, दुर्ग की टीम ने दिया।

सामूहिक यज्ञ से पूर्व यज्ञ विज्ञान की जानकारी दी गई और यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया। यज्ञाहुतियों के पश्चात् प्राणायाम एवं ध्यान का सामूहिक प्रयोग भी कराया गया। आयोजक मण्डल ने प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए ऐसे कार्यक्रम गाँव-गाँव आयोजित करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि दुर्ग-भिलाई उपजोन में ऑनलाईन गोष्ठियों के माध्यम से भी इस प्रकार के प्रयोग-प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जाएगा।

राजनांदगाँव में सामूहिक प्रयोग

राजनांदगाँव, छत्तीसगढ में बसंत पंचमी की सायं 4 से 5 बजे माहेश्वरी समाज में लगभग 48 बहिनों तथा 25 किशोर बालक-बालिकाओं ने सामूहिक सूक्ष्म यज्ञ किया। कार्यक्रम संचालन श्रीमती रूपाली गांधी और श्रीमती ओमवती सिंह ने किया। कम समय और कम खर्च में विराट यज्ञ की अनुभूति और लाभ सभी ने पाए।

बृजेश चौहान साहित्य देते हुए

राज्यपाल को साहित्य भेंट

वाराणसी। उत्तर प्रदेश : 31 जनवरी 2022 को गायत्री शक्तिपीठ, नगवां, लंका, वाराणसी के युवा प्रतिनिधि श्री बृजेश चौहान बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री फागू चौहान जी से भेंट करने सर्किट हाउस, वाराणसी पहुँचे। इस अवसर पर उन्होंने अपने सद्ग्रंथ स्थापना अभियान के अन्तर्गत राज्यपाल महोदय को गायत्री परिवार की गतिविधियों की जानकारी दी तथा 'युगऋषि के संदेश' ग्रंथ भेंट किया।

ऑनलाइन सम्पन्न हुआ लोकसेवी प्रशिक्षण शिविर

रायपुर। छत्तीसगढ़

जिला संयुक्त समन्वय समिति रायपुर द्वारा 17 से 23 जनवरी 2022 तक युग पुरोहित प्रशिक्षण शिविर एवं 28 जनवरी से 3 फरवरी 2022 तक परिव्राजक प्रशिक्षण (कर्मकांड) शिविर का ऑनलाइन आयोजन किया। रायपुर जिले के अलावा पूरे प्रदेश के कार्यकर्त्ता एवं परिजनों ने इनमें भाग लिया।

युग पुरोहित प्रशिक्षण का शुभारंभ गायत्री तपोभूमि मथुरा के व्यवस्थापक श्री ईश्वर शरण पांडेय जी ने दीप प्रज्वलन एवं अपने आशीर्वचन से किया। उन्होंने युग पुरोहितों से युगऋषि के सद्ज्ञान के प्रकाश से समाज को व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास व भ्रान्तियों से मुक्ति दिलाने का आह्वान किया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा थे। उन्होंने बताया कि युग पुरोहित की पहली आवश्यकता है व्यक्तित्व का विकास, जो प्रतिदिन स्वाध्याय, साधना, संयम और सेवा के नियमित अभ्यास से ही संभव है। प्रशिक्षकों की भूमिका सर्वश्री प्रभात उपाध्याय, परमानंद जी, सीताराम विश्वकर्मा, लच्छुराम निषाद आदि ने निभाई।

दिनांक 28 जनवरी से 3 फरवरी तक का कर्मकांड प्रशिक्षण शान्तिकुञ्ज से श्री पूरण लाल चंद्राकर एवं श्री रामप्रसाद आदित्य ने सम्पन्न कराया। श्री मनहरण लाल साहू, श्री सीपी साहू, श्रीमती सरला कोसरिया ने परिव्राजकों की ज्ञान-समृद्धि के लिए विविध विषयों पर कक्षाएँ लीं।

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर लखनऊ का वाङ्मय स्थापना अभियान

अब तक 356 पुस्तकालयों में सम्पूर्ण वाङ्मय स्थापित हुए

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत भारत के जानेमाने वरिष्ठ अभियन्ताओं के संस्थान 'द इंस्टिट्यूशन इंजीनियर्स इण्डिया' के उत्तर प्रदेश राज्य केन्द्र, लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय (79 खण्ड) की स्थापना हुई। इस स्थापना में इं. श्री पी.डी. सरास्वत का विशेष योगदान रहा।

अगली स्थापना 'शेखर स्कूल ऑफ नर्सिंग कालेज इन्दिरा नगर लखनऊ के केन्द्रीय पुस्तकालय में हुई। यह साहित्य गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट गायत्री मंदिर इन्दिरा नगर लखनऊ सक्रिय कार्यकर्ता श्री जितेन्द्र सिंह ने भेंट किया। इस अवसर पर शेखर ग्रुप लखनऊ के प्रबन्ध निदेशक डॉ. ए.के. सचान, निदेशक डॉ. रिचा मिश्रा, और प्रधानाचार्य श्री दिनेश सिंह, श्री अरविन्द शेखर उपप्रधानाचार्य एवं श्री ध्रुव कमार सिंह अधीक्षक नर्सिंग अन्य वरिष्ठ अधिकारी, संकाय सदस्य तथा उमानंद शर्मा, श्रीमती ऊषा सिंह, श्रीमती पुष्पा सिंह तथा छात्रायें उपस्थित थे।

दोनों ही स्थानों पर अभियान संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने युगऋषि के विचारों के प्रभाव एवं उनकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

शेखर स्कूल ऑफ नर्सिंग कालेज में वाङ्मय स्थापना

बाल निर्माण

ऑनलाइन बाल संस्कार शाला

प्रतिदिन लगभग 7 घण्टे चलती हैं कक्षाएँ बच्चों के साथ बड़े भी होते हैं लाभान्वित

पिपरिया में कारागार के अधिकारियों को मंत्र बॉक्स भेंट करते परिजन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

लखनऊ, कानपुर, अयोध्या, पुणे और गुरुग्राम के युवाओं के सहयोग से आदर्श जीवनचर्या के शिक्षण का एक ऑनलाइन सफल प्रयोग 10 जून 2021 से ही चल रहा है। प्रशिक्षण संचालिका लखनऊ की सुश्री निष्ठा रस्तोगी बताती हैं कि जूम एप पर शिक्षण का यह प्रयोग बाल संस्कार शाला के रूप में आरंभ किया गया था, लेकिन यह अब विभिन्न शहरों के बच्चे, युवा, महिलाएँ और वरिष्ठ परिजन सभी को आकर्षित कर रहा है। पूरा कार्यक्रम यूट्यूब (Hindi & Gayatri By Nishtha Rastogi) पर लाइव भी होता है। लोग इनकी प्रेरणाओं को अपनाते हैं और उनका पालन करते हुए उनके वीडियो उक्त चैनल पर अपलोड कर रहे हैं। ऐसे 725 से अधिक वीडियो उपरोक्त चैनल एवं व्हाट्सएप 'बाल संस्कार शाला ग्रुप' (7860258179) पर उपलब्ध हैं।

लखनऊ सहित कई नगरों के कार्यकर्त्ता करते हैं संचालन

बाल संस्कार शाला के कार्यक्रम प्रतिदिन 6 सत्रों में होते हैं। इनमें प्रातःकाल यज्ञ का सीधा प्रसारण, प्रज्ञागीत, प्रवचन, ध्यान, विभिन्न पुस्तकों का स्वाध्याय, संगीत, मंत्रों का अभ्यास, पर्व-त्यौहार मनाना, विभिन्न प्रतियोगिताएँ आदि का समावेश रहता है।

इसके संचालन में अयोध्या के रुद्रांश दूबे, कानपुर के अद्विक द्विवेदी, लखनऊ के वैभव श्रीवास्तव, डॉ. आर.पी. गुप्ता,श्रीमती आशा भटनागर, श्रीमती रेखा मुकुल, श्री अनिल तिवारी, श्री माधव शर्मा, श्री लल्लू जी अग्रवाल, श्री ज्ञान किशोर श्रीवास्तव और श्री के.बी. सिंह महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। अंग्रेजी स्वाध्याय एवं शिक्षण में प्रतिष्ठा रस्तोगी व प्रोफेसर अनामिका शर्मा, अक्षत, रवि व अन्य युवाओं की टीम इंजीनियर सूर्यकांत शर्मा के नेतृत्व में कार्य कर रही है।

लता मंगेशकर जी को श्रद्धांजलि

उदयपुरवाटी, झुंझुनू। राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा के तत्वाधान में गायत्री प्रज्ञापीठ भूरीकुड़ी में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित नागरिकों ने राष्ट्रीय सौहार्द एवं लोकशांति के लिए यज्ञ में गायत्री महामंत्र के उच्चारण के साथ आहुतियाँ दी।

इस अवसर पर स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर दीदी के चित्र पर श्रद्धा सुमन भी अर्पित किए एवं उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप दो मिनट का मौन रखा गया। सभी याजकों ने लता जी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। गायत्री परिवार के कार्यवाहक श्री बजरंग लाल सोनी ने स्वर्गीय लता जी के गाए हुए भजन प्रस्तुत किए। सर्वोदय कार्यकर्त्ता भाई बद्री प्रसाद तंवर ने स्वर्गीय लता जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला।

बड़े-बड़े अपराधों का प्रारम्भ छोटे-छोटे दोषों से होता है। दोषों से भयभीत होना आरम्भ हो तो अपराधों से थरथराना न पड़े।

गुजरात में वसंत पंचमी के आकर्षक, उल्लासभरे आयोजन

जीवन के सौभाग्य का बोध कराया, सद्ग्रंथ स्थापना का शानदार अभियान

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा में बसंत पर्व मनाते परिजन

भावनगर में सद्ग्रंथ स्थापना

अडाजण में मनमोहक दीपयज्ञ की तैयारी

शान्तिकुञ्ज से जुड़ी गाँव-गाँव की शाखाएँ

मोडासा । अरवल्ली : गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा में प्रकृति के उल्लास एवं आत्मबोध का पर्व वसंत पंचमी पर प्रातःकाल माँ सरस्वती और पावन गुरुसत्ता का पूजन गायत्री यज्ञ के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी याजकों ने कोरोना रूपी महामारी से मानवता को मुक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना की। उपस्थित लोगों को परम पूज्य गुरुदेव के जीवन का अनुसरण करते हुए ईश्वर से प्राप्त विभूतियों को आत्मशक्ति के उद्‌भव तथा मानवता के उत्थान के लिए खर्च करने की प्रेरणा दी गई।

सायंकाल दीपयज्ञ एवं सामूहिक आरती का कार्यक्रम रखा गया था। गायत्री चेतना केन्द्र से जुड़ी पूरे जिले की शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं शाखाओं ने शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन संचालित हो रहे कार्यक्रम से जुड़कर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के प्रेरक आशीर्वचनों का लाभ लिया।

61 घरों में सद्ग्रंथ स्थापना

भावनगर : गायत्री धाम-चित्रा में नौ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ वसंत पंचमी का पावन पर्व मनाया गया। पर्व पर छाये वासंती उल्लास के संग 61 कार्यकर्त्ताओं ने अपने घर सद्ग्रंथों की स्थापना कराई। स्थापना से पूर्व श्रद्धालुओं ने मस्तक पर सद्ग्रंथ धारण कर शानदार शोभायात्रा निकाली। इसका समापन गुरुस्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की शोभायात्रा के साथ हुआ। सायंकाल दीपयज्ञ एवं महाआरती का कार्यक्रम रखा गया था।

सद्ग्रंथ स्थापना अभियान

भुज, कच्छ : गायत्री शक्तिपीठ भुज में आयोजित कार्यक्रम में 29 साधक भाई-बहिनों ने वसंत पंचमी से होली पर्व तक चलने वाले 40 दिवसीय अनुष्ठान साधना के संकल्प लिए। सायंकाल दीपयज्ञ के साथ 60 प्रबुद्ध जनों के घरों में युगऋषि द्वारा रचित सद्ग्रंथों की स्थापना की गई। गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख परिजन सर्वश्री नरेन्द्र भाई सोनी, चंद्रशेखर वोरा एवं मधुसूदन अंताणी ने सद्ग्रंथों का पूजन किया।

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता स्व. श्री जे.पी. ठक्कर की स्मृति में सद्ग्रंथ स्थापना अभियान के लिए विशेष अनुदान दिया गया था। स्थानीय महिला मण्डल और युवा मण्डल ने वसंत पंचमी के अगले दिन से घर-घर जाकर सद्ग्रंथ स्थापना करना आरम्भ कर दिया।

अडाजण, सूरत : सौरभ रो हाउस में रहने वाले कार्यकर्त्ता एवं सेवाभावी नीताबेन के सहयोग से आध्यात्मिक आकृतियों में आकर्षक रूप से सजाए गए 1131 दीपों के साथ माँ सरस्वती की वंदना की गई और परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी को संकल्प श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 7 बहिनों ने सद्ग्रंथों की स्थापना कराई।

देविकाबेन ने वसंत पंचमी तक 108 घरों में सद्ग्रंथ स्थापना कराने का संकल्प लिया था। गुरुकृपा से 115 घरों में स्थापना हुई। इसके साथ 111 घरों में यज्ञ, 250 गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाओं का वितरण एवं 500 लोगों में युग साहित्य वितरण का महान कार्य सम्पन्न हुआ।

अनुष्ठान साधना के संकल्प लिए

अहमदाबाद : गायत्री प्रज्ञा मंदिर कृष्णनगर अहमदाबाद पर वसंत पंचमी के दिन दीपयज्ञ के साथ नौ दिवसीय अनुष्ठान की पूर्णाहुति तथा 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान संकल्प का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में लगभग 100 भाई-बहिनों ने भाग लिया। इसका संचालन रीटाबेन पटेल और सरोजबेन पटेल ने किया।

खंभालिया, द्वारका : शक्तिपीठ खंभालिया में वसंत पंचमी के पावन दिन पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ पुंसवन, विद्यारंभ, गुरुदीक्षा संस्कार सम्पन्न कराए गए। लगभग 300 भाई-बहिनों ने इसमें भाग लिया। श्रीमती प्रेमलता बेन वर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पुलवामा में आतंकी हमले की तीसरी बरसी पर शहीद सैनिकों को भावभरी श्रद्धांजलि

देश की एकता-अखण्डता के लिए समर्पित रहने की प्रतिबद्धता दोहराई

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

14 फरवरी को गायत्री परिवार के परिजनों ने नगर स्थित शहीद स्तंभ पर श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान को याद किया। सर्वश्री यादोराव निंबालकर, रामदास देशमुख, सुधाकर अजमीरे, लता अजमीरे, मीरा देशमुख, गौरी सूर्यवंशी, मनोज खवादे के साथ कई परिजन शहीद स्मारक पर उपस्थित रहे।

शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि देते परिजन

रामदास देशमुख ने पुलवामा हमले के साथ-साथ सीमाओं पर हुए गलवान घाटी जैसे सघर्षों में भारतीय जवानों की वीरता की गाथाओं का स्मरण दिलाया। उन्होंने इसके साथ अपने नागरिक कर्त्तव्यों की याद दिलाई एवं राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के प्रति समर्पित रहने की प्रतिबद्धता दोहराई। गायत्री परिवार द्वारा लगाए गए जोश और उत्साह से भरे नारों से पूरा परिसर गूँज उठा।

शहीदों को शत-शत नमन एवं वीरता की गौरवानुभूति

मथुरा। उत्तर प्रदेश

14 फरवरी को पुलवामा में हुए आतंकी हमले की तीसरी बरसी थी। देश ने इस हमले में शहीद हुए सीआरपीएफ के जवानों के सर्वोच्च बलिदान को याद करते हुए नम आँखों से भावभरी श्रद्धांजलि दी। मथुरा में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के कार्यकर्त्ताओं ने उनकी प्रतिमाओं पर दीप जलाकर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

युवा प्रकोष्ठ संयोजक श्री संजय शर्मा ने अपने श्रद्धांजलि संदेश में सरहदों पर डटे जवानों की सेवाओं को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया। उन्होंने कहा कि हमें भी अपने भीतर देश के नवनिर्माण का वही जोश, वही उत्साह विकसित करना चाहिए। यही शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उपस्थित युवकों ने भारतीय जवानों की वीरता पर भी गौरव बोध किया, जिन्होंने 12 दिनों के अंदर ही इस कायरतापूर्ण कृत्य का बदला ले लिया था। कृष्णकुमार, बनवारी केशरी, रोहित वर्मा अन्य कार्यकर्त्ताओं ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की।

तीन माह में शताधिक घरों में कार्यक्रम कराए

कोटा। राजस्थान

नवचेतना विस्तार केन्द्र, सकतपुरा, कुन्हाडी लगभग प्रत्येक दिन यज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रमों का संचालन करते हुए अपने क्षेत्र में सद्विचारों का प्रकाश फैला रहा है। शाखा कार्यवाहक श्री राम रतन नरवर से मिले समाचारों के अनुसार उनका मण्डल विचार क्रान्ति के सुनिश्चित लक्ष्य को लेकर सक्रिय है। वे बारह वर्षीय युग परिवर्तन महापुरश्चरण साधना अभियान चलाते हुए जन-जन को व्यक्तिगत जीवन के उत्थान के लिए गायत्री उपासना की प्रेरणा देने में सफल हो रहे हैं।

गायत्री चेतना केन्द्र कुन्हाडी द्वारा विगत तीन माह में सौ से ज्यादा घरों में यज्ञ-संस्कार आदि के विविध कार्यक्रम कराए गए हैं। इस अभियान के अन्तर्गत वे देवस्थापना, गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, संस्कार आदि के द्वारा नित नए घरों को मिशन से जोड़ रहे हैं। पंच कुण्डीय यज्ञ के सार्वजनिक आयोजन और घर-घर अखण्ड जप जैसे कार्यक्रम भी जनचेतना जगाने में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

श्री राम रतन नरवर बताते हैं कि उनके द्वारा हर घर को, हर व्यक्ति को मांस, मदिरा, गुटका आदि से मुक्त करने के साथ हर व्यक्ति द्वारा पेड़ लगाने का संकल्प दिलाने का प्रयास प्रमुख रूप से किया जाता है, जिसका समाज पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। इन दिनों सद्ग्रंथ स्थापना और उसके स्वाध्याय के लिए लोगों को विशेष रूप से प्रेरित किया जा रहा है।

जाग्रत् कर्मठ नारी का आदर्श

मंदोवरी देवी

स्व. मंदोवरी देवी

जोधपुर। राजस्थान : नारी जगत ही नहीं, पूरे समाज में प्रगतिशील विचारों का प्रकाश फैलाने वाली वयोवृद्ध माता मंदोवरी देवी, पत्नी श्री बिहारी लाल राठी का 25 जनवरी 2022 को 93 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। गीता के 760 श्लोक बोलकर उनका हिन्दी अनुवाद समझाने वाली एवं नित्य रामायण पाठ करने वाली माता मंदोवरी देवी अपने क्षेत्र की बहुत सम्मानित महिला थीं। वे नारी जागरण आन्दोलन को गति देने वाली गायत्री परिवार की बहुत अच्छी कार्यकर्त्ता थीं। उनके निवास के समाने काली माँ का मंदिर है। कॉलोनी वाले कहते थे कि ईश्वर को हमने नहीं देखा, लेकिन समाज को निरंतर सत्प्रेरणाएँ प्रदान करने वाली इस माँ में हमने साक्षात ईश्वर को देखा है।

> श्रीमती मंदोवरी देवी को लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्हें गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ था।

> कॉलोनी वाले कहते थे कि ईश्वर को हमने नहीं देखा, लेकिन समाज को निरंतर सत्प्रेरणाएँ प्रदान करने वाली इस माँ में हमने साक्षात ईश्वर को देखा है।

श्रीमती मंदोवरी देवी एक प्रबुद्ध नारी थीं, जिन्होंने अपने जमाने में छाछरो (पाकिस्तान) में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। उन दिनों की परिस्थितियों में शिक्षा जगत में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्हें गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ था। सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय उन्होंने भारत में शरण ली। तब से वे यहीं अपनी सेवाभावना से समाज को लाभान्वित करती रहीं।

नेत्रदान किया : स्व. मंदोवरी देवी के पौत्र डॉ. अनिल राठी और पौत्रवधु डॉ. अनिशा राठी भी गायत्री परिवार के अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। उन्होंने अपनी माता की इच्छा का सम्मान करते हुए उनके नेत्रदान के संकल्प को पूरा किया। अब तक 10265 लोगों को नेत्र ज्योति प्रदान कर चुकी 'आई बैंक सोसायटी' के समाजसेवी श्री पुखराज अग्रवाल ने डॉ. अनिल राठी के घर पहुँचकर स्व. मंदोवरी देवी के दोनों कॉर्निया प्राप्त किए।

दिवंगत दिव्यात्माओं को श्रद्धांजलि

श्रीयुत् श्रीनाथ टंडन, जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर के संस्थापक श्रीयुत् श्रीनाथ टंडन का 4 फरवरी 2022 को देवगमन हो गया। प.पू. गुरुदेव के प्रति अद्‌भुत समर्पण रखने वाले टंडन जी ने न केवल1980 के दशक में स्वयं की जमीन गायत्री शक्तिपीठ के निर्माण के लिए उपलब्ध कराई, बल्कि पूरे क्षेत्र में जनजागृति के कार्यक्रमों में भी अग्रणी भूमिका निभाई। सन् 1995 में जबलपुर में आयोजित अश्वमेध यज्ञ में उनकी भूमिका अविसमरणीय रहेगी।

दिवंगत दिव्यात्मा स्व. टंडन जी को अपने आवास पर तीन दिन तक पूज्य गुरुदेव के आतिथ्य सत्कार का अवसर प्राप्त हुआ। सन् 1980 में वे परम पूज्य गुरुदेव के सारथी (ड्राइवर) कहे जाते थे।

श्री कृष्णदेव सिंह, **भुबनेश्वर। ओडिशा**

युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित साधक श्री कृष्णदेव सिंह का 16 जनवरी 2022 को 84 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे मूलतः बिहार के सासाराम जिले में जन्मे कृषि वैज्ञानिक थे। फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन राउरकेला और भुबनेश्वर में रहते हुए उनके पूरे परिवार ने मिशन का भरपूर काम किया। गायत्री शक्तिपीठ-यूनिट-9, गायत्री शक्तिपीठ चन्द्रशेखरपुर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ पंडरा के निर्माण में उनका विशिष्ट योगदान रहा।

वानप्रस्थी श्री वाडिया बापू, **अमरेली। गुजरात**

बरवाला बावीसी शाखा के प्राणवान कार्यकर्त्ता और अमरेली जिले में गायत्री परिवार की नींव रखने वालों में से एक श्री वाडिया बापू 97 वर्ष की अवस्था में 14 फरवरी 2022 को गुरुचेतना में विलीन हो गए। वे परम पूज्य गुरुदेव के साथ परिव्रज्या में भी रहे थे। उन्होंने वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करते हुए पूरा जीवन मिशन के लिए समर्पित किया। उनका निधन पूरे जिले के लिए अपूरणीय क्षति है।

जो व्यक्ति तुम्हारे सामने औरों की निन्दा करता है, वह अन्यों के सामने तुम्हारी निन्दा करने में नहीं चूकेगा। - शेखसादी

गुरुसत्ता के बोध दिवस-बसन्त पर्व पर शिष्यों की भावभरी श्रद्धांजलि

सच्ची गुरुभक्ति का परिचायक है 'सादा जीवन, उच्च विचार'

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

मुरादाबाद स्थित योग शक्ति गायत्री चेतना केंद्र तथा प्रज्ञा पीठ लाइनपार में पाँच-पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञों के साथ बसंत पंचमी का पावन पर्व मनाया गया। चेतना केन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रीमती सविता भटनागर एवं श्रीमती शीला त्यागी की टोली ने पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व के अनुसरण की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सादा जीवन, उच्च विचार में ही हमारी सच्ची गुरुभक्ति है। हम अपने दैनंदिन जीवन में सच्चाई, अच्छाई और समाजहित की भावना को शामिल कर सकें, सही मायनों में यही यज्ञ है।

गायत्री चेतना केन्द्र में पूर्व संध्या पर सुंदर भजन संध्या एवं दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। बसंत पर्व के दिन लगभग 300 लोगों ने यज्ञ कर भोजन प्रसाद ग्रहण किया। प्रज्ञा पीठ लाइनपार में श्री दीपक कुमार त्यागी ने प्रेरक

बसंत पर्व पर मुरादाबाद में पंच कुण्डीय यज्ञ

संस्मरणों के साथ यज्ञ संचालन किया, परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षाओं का स्मरण कराकर सत्संकल्प जगाए।

दोनों केन्द्रों की व्यवस्था श्री एल.के. त्यागी के मार्गदर्शन में हुई। प्रज्ञापीठ की व्यवस्था में श्री एस.एन. मिश्रा एवं चेतना केन्द्र की व्यवस्था में श्री हरीश वर्मा, पवन, पुष्पा, हेमंत वासने का विशिष्ट सहयोग रहा।

पश्चिमोत्तर क्षेत्र में संगठन एवं सक्रियता में आया निखार

चंडीगढ़। केन्द्र शासित प्रदेश

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा पूर्वोत्तर भारत में मिशन की गतिविधियों के प्रचार-विस्तार के लिए किए जा रहे अभिनव प्रयासों के अन्तर्गत पंजाब, चण्डीगढ़ एवं उत्तरी हरियाणा के संयुक्त जोन का गठन किया गया है। नवनियुक्त जोन समन्वयक श्री चंद्रमोहन शर्मा के मार्गदर्शन में वसंत पंचमी की उत्साह एवं ऊर्जावर्धक वेला में पूरे जोन में विचार गोष्ठियों का आयोजन हुआ। इनमें शक्तिपीठों-प्रज्ञा केन्द्रों को मात्र पूजा स्थली न रहने देकर गुरुसत्ता की आकांक्षाओं के अनुरूप जनजागृति के केन्द्र बनाने पर विचार-विमर्श हुआ। लुधियाना, जालन्धर, रोपड़, निहालखेड़ा, होशियारपुर, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, पंचकूला के ग्रामीण क्षेत्रों व मोहाली के प्राणवान नागरिकों

वसंत पर्व पर चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा में सद्ग्रंथ स्थापना की उमंग

को साथ लेकर संगठन को मजबूत करने तथा भावी सक्रियता के कार्यक्रम निर्धारित किए गए। मोहाली में योग का नियमित क्रम एवं आयुर्वेदिक चिकित्सालय प्रारम्भ करने का निर्णय हुआ। कुरुक्षेत्र में स्वास्थ्य चिकित्सा शिविरों के आयोजन एवं लुधियाना में सद्ग्रंथ स्थापना अभियान को गति देने का उत्साह उभरा, कार्यक्रम निर्धारित हुए। श्री चंद्रमोहन शर्मा जी के अनुसार सभी केन्द्रों पर वसंत पंचमी के कार्यक्रम नई ऊर्जा और उल्लास के साथ आयोजित हुए।

युवा जागृति संदेश

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस-पावन वसंत पर्व पर अलीगढ़ एवं हरदुआगंज में युवा प्रकोष्ठ प्रभारी कु. ममता चौहान एवं अन्य कर्मठ कार्यकर्त्ताओं द्वारा युवा जागृति के विशेष प्रयास हुए। अलीगढ़ में पर्व की पूर्व संध्या पर युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें कु. ममता चौहान एवं शिवम ने प्रतिभागी युवाओं को पूज्य गुरुदेव की आकांक्षाओं पर खरे उतरने और विचार क्रांति अभियान को गति दिने का आह्वान किया।

5 फरवरी को गायत्री चेतना केन्द्र तथा गायत्री शक्तिपीठ पर पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ माँ सरस्वती का अवतरण पर्व मनाया गया। दीक्षा संस्कार, पुंसवन संस्कार, विद्यारंभ इत्यादि संस्कार हुए। हरदुआगंज मंदिर में आयोजित वसंत पंचमी के कार्यक्रम में स्थानीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी कीर्ति बंसल व मधु गर्ग के सहयोग से 12 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार कराया गया।

नैष्ठिक सक्रियता का सम्मान

बूँदी। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूँदी में बसंत पर्व पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। श्रीमती दमयंती सिंह, उमा मेवाड़ा ने यज्ञ का संचालन किया एवं श्रीमती उषा शर्मा ने वसंत पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला। विद्यारंभ,अन्नप्राशन संस्कार भी हुए। जिन महिलाओं ने घर-घर गंगाजल एवं देवस्थापना अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, उन्हें गुरुदेव का साहित्य तथा उपवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री सुरेश कुमार विजयवर्गीय ने सभी को बसंत पर्व की शुभकामनाएँ दीं।

शक्तिपीठ बूँदी पर यज्ञ कराती बहिनों की टोली

ऐसा कपड़ा किस काम का?

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के अनन्य भक्त मथुरा बाबू ने एक बार उन्हें बड़ा कीमती वस्त्र लाकर दिया। उसे पहनकर परमहंस देवी के ध्यान में बैठ गए। ध्यान पूरा होने के बाद जब वे भगवती को दण्डवत प्रणाम करने लगे तो प्रणाम करते समय उनके मन में क्षण भर को यह विचार उठा कि कहीं मूल्यवान कपड़े में धूल न लग जाए।

बाद में इस घटना को लेकर उन्होंने आत्मनिरीक्षण किया। उन्होंने विचार किया कि यह मूल्यवान वस्त्र उनकी भक्ति में बाधक बन रहा है, इसे नहीं पहनना चाहिए। उन्होंने तुरन्त वह वस्त्र वापस कर दिया।

शिक्षाएँ :

1. कीमती वस्त्र-लोकवैभव सहज साधना में बाधक होते हैं।
2. कोई भेंट देता है इसलिए कुछ भी स्वीकार कर लेना उचित नहीं है।
3. भूल का सुधार तुरन्त होना चाहिए।

राजधानी क्षेत्र में नवजागृति

गायत्री शक्तिपीठ हिण्डन पर यज्ञ करते परिजन

हिण्डन, गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ हिण्डन तट पर नौ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ बसंत पर्व एवं प.पू. गुरुदेव का बोध दिवस मनाया गया। लगभग 500 श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लिया। 15 दीक्षा एवं कुछ अन्य संस्कार भी हुए। इसे शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री सूरत अमृते, प्रेमलाल बिर्ला की टोली ने सम्पन्न कराया।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री अशोक कुमार मित्तल ने बताया कि शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों की उपस्थिति का लाभ लेते हुए क्षेत्र में कई और कार्यक्रम भी हुए। अवंतिका कॉलोनी, चिरंजीव विहार में दीप यज्ञ संपन्न कराया गया। 6 फरवरी की प्रातः नंदग्राम शाखा ने पाँच कुण्डीय यज्ञ एवं शाम को शालीमार गार्डन शाखा ने अपने दीप यज्ञ के आयोजन के साथ बसंत पर्व पूजन का कार्यक्रम रखा था। गायत्री शक्तिपीठ हिण्डन तट के माध्यम से लोनी एवं प्रताप विहार शाखाओं ने भी बसंतोत्सव पर पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ किए।

गाँव-गाँव खिले श्रद्धा और भक्ति के वासंती फूल

गायत्री चेतना विस्तार केन्द्र बाड़ाभड़कौल में परम पूज्य गुरुदेव का बोध दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

अलवर। राजस्थान

अलवर एवं करौली जिलों की कई शाखाओं ने दिनांक 5 फरवरी को बसंत पंचमी पर्व का आयोजन बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ किया। वाणी एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती का पूजन तथा परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा जी आचार्य के आध्यात्मिक जन्मदिन पर संकल्प श्रद्धाञ्जलि अर्पण के ये कार्यक्रम चौबीस, नौ एवं पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञों के साथ आयोजित किये गए थे।

अलवर शहर : गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड में हुए नौ कुण्डीय यज्ञ में 150 से भी अधिक परिजनों ने विश्व कल्याणार्थ आहुतियाँ समर्पित कीं। आत्मजागृति के इस इस पावन पर्व पर जन्म दिवस और विवाह दिवस सहित विविध संस्कार बड़ी संख्या में हुए। समारोह का संचालन बहिनों की टोली ने किया।

बाड़ाभड़कौल : मालाखेडा तहसील के बाड़ाभड़कौल में अमित पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल परिसर में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ बसंत पर्व मनाया गया। उल्लेखनीय है कि स्कूल के निदेशक श्री खिल्लूराम जांगड़े ने गायत्री परिवार अलवर को गायत्री नव चेतना केन्द्र के भवन निर्माण हेतु भूमि प्रदान की है, जिसका भूमि पूजन भी बसंत पर्व के दिन हुआ।

कांकरौली : गायत्री परिवार कठूमर को तहसील स्थित कांकरौली में गायत्री परिवार की गतिविधियों के संचालन एवं गायत्री चेतना केन्द्र के लिए दान में भवन प्राप्त हुआ है। बसंत पंचमी के दिन यज्ञ के साथ इसका पूजन किया गया।

बसंत पर्व पर अलवर जिले के ही गायत्री शक्तिपीठ राजगढ़ पर नौ कुण्डीय, गायत्री प्रज्ञा पीठ बानसुर पर पाँच कुण्डीय, गायत्री शक्तिपीठ खैरथल, गायत्री शक्तिपीठ किशनगढ़ बास पर भी यज्ञीय कार्यक्रमों के साथ बसंत पर्व मनाते हुए सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपनी श्रद्धा पुष्ट की। तहसील बानसुर के गाँव श्यामपुरा में श्री प्रदीप कुमार एवं श्री गजेंद्र ने अपने गाँव में चौबीस कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के आयोजन के साथ बसंत पंचमी पर्व मनाया।

करौली जिले में : गायत्री शक्तिपीठ करौली पर श्री श्याम सुंदर शर्मा (कुम्हेर)की टोली ने पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ बसंत पंचमी पर्व सम्पन्न कराया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ प्रांगण में श्री राजेन्द्र प्रसाद दीवान द्वारा बनवाये गए परिव्राजक आवास का भी लोकार्पण हुआ।

संस्कार, सद्ग्रंथ स्थापना, मंत्र लेखन एवं गौसंवर्धन

- 51 परिजनों के घर में सद्ग्रंथ स्थापना हुई।
- 250 मंत्र लेखन पुस्तिका का भी वितरण किया गया। सामूहिक मंत्र लेखन साधना की पूर्णाहुति नवरात्रि में होगी।
- श्रीराम गौशाला के विस्तार हेतु चाहरदीवारी के निर्माण का काम प्रारम्भ। आगामी चैत्र नवरात्रि से वहाँ सप्त गो-प्रदक्षिणा कार्यक्रम आरम्भ किये जाने की संभावना है।

चंद्रपुर। महाराष्ट्र

गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर पर बसंत पंचमी के दिन उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालुओं में आत्म जागृति एवं आत्म विकास की शानदार उमंग दिखाई दी। पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ माँ सरस्वती की पूजा की गई तथा परम पूज्य गुरुदेव का आध्यात्मिक जन्मदिन मनाया गया। नई प्रेरणा और नई चेतना

गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर पर हुए यज्ञोपवीत संस्कार

का संचार करने वाली पावन वेला में संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए। 57 परिजनों ने दीक्षा अथवा प्रायश्चित दीक्षा संस्कार कराया। 4 बहिनों के गर्भ संस्कार, 3 भाइयों के यज्ञोपवीत संस्कार और 17 बच्चों के विद्यारंभ संस्कार, एक अन्नप्राशन व दो विवाह संस्कार कराए गए।

सफलता कड़ी मेहनत, कार्यकुशलता, नैतिकता, नियमितता और पिछली गलतियों से सीखते हुए आगे बढ़ते जाने का परिणाम होती है।

बसंत पर्व पर फलती-फूलती संस्कार परम्परा

विविध संस्कार हुए, प्राकृतिक रसाहार केन्द्र का शुभारंभ

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ समता कॉलोनी एवं गायत्री प्रज्ञापीठ में बसंत पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। श्री श्याम बैस ने बताया कि शक्तिपीठ पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने बसंत की पवित्रता-ऊर्वरता का लाभ उठाते हुए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने विविध संस्कार कराए। अनेक लोगों ने लोककल्याण, आत्मकल्याण के निमित्त यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित कीं।

गायत्री शक्ति पीठ दावड़ा कालोनी रायपुर में वसंत पर्व के पावन अवसर पर वरिष्ठ परिजन श्री प्रकाश दावड़ा एवं श्री सुखदेव प्रसाद देवांगन ने माँ भगवती प्राकृतिक आहार केन्द्र का शुभारंभ किया। वहाँ निरोगी जीवन के लिए स्वास्थ्य

रायपुर में बच्चों का विद्यारंभ संस्कार कराते परिजन

वर्धक एलोवेरा, आँवला, करेला, गाजर, जवारा, नारियल आदि रस एवं अंकुरित आहार उपलब्ध रहेगा।

गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री लच्छू राम निषाद ने बताया कि कोटा, टाटीबंध, संतोषी नगर, कुशालपुर, खमतराई स्थित प्रज्ञापीठ में बसंत पर्व के उपलक्ष्य में अखंड जप, यज्ञ आदि के कार्यक्रम हुए, सैकड़ों श्रद्धालुओं ने युगऋषि के श्रीचरणों में अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

34 बटुकों का उपनयन संस्कार व बुजुर्गों का सम्मान

उन्नाव। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उन्नाव पर पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ वसंत पर्व मनाया गया। इस अवसर पर युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के बोध दिवस के उपलक्ष्य में उनके जीवन-आदर्शों की विशेष रूप से याद दिलाई गई तथा श्रद्धालुओं को मानवता के उत्थान, राष्ट्र के नवनिर्माण के महायज्ञ में भागीदारी की प्रेरणा दी गई। इन्हीं दिव्य प्रेरणाओं के साथ 34 बटुकों का उपनयन संस्कार भी गायत्री शक्तिपीठ उन्नाव पर सम्पन्न हुआ।

उन्नाव में उपनयन संस्कार कराते बटुक

वसंत पर्व आयोजन में कला की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती के अवतरण दिवस पर विशेष पूजन हुआ। उन्नाव की भूमि को गौरवान्वित करने वाले महाकवि पं. सूर्यकान्त निराला के जन्मदिवस पर श्रद्धा सुमन समर्पित किए गए। शक्तिपीठ संस्थापिका भाग्यवती त्रिपाठी को भी उनके जन्मदिन पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए।

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की जयंती भी मनाई गई

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री सिद्धनाथ श्रीवास्तव (एडवोकेट) ने अपना जन्मदिन मनाते हुए वरिष्ठों को मंत्र पट्टिका भेंट कर उनसे आशीर्वाद लिए। उन्होंने कहा कि माता, पिता, गुरु एवं बुजुर्ग जीवंत देवता हैं। उनके सम्मान से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है।

50 विद्यालयों में करेंगे पाँच कुण्डीय यज्ञ

सानन्द। गुजरात : गायत्री परिवार, सानन्द शाखा ने ऋषि आश्रम शाला, सानन्द में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के आयोजन के साथ वसन्त पंचमी का पावन पर्व मनाया। परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस से सानन्द शाखा द्वारा 50 विद्यालयों में पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ आयोजित करने की शृंखला का शुभारम्भ हुआ।

नई पहल

विद्यार्थियों में साधना-स्वाध्याय के संकल्प जगाए

बलरामपुर, ढेंकानाल। ओडिशा

बसन्त पंचमी पर्व के शुभ अवसर पर बलरामपुर ग्राम के तृतीयादेव जी मंदिर के प्रांगण में दो दिवसीय कार्यक्रम हुए। 4 फरवरी को विद्यार्थियों के लिए 'जागरूकता कार्यक्रम' और सायंकाल दीपयज्ञ किया गया। वसंत पंचमी पर्व पंच कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ बड़े जोश एवं उत्साह से मनाया गया, जिसमें छात्रों और उनके अभिभावकों की बड़ी संख्या में भागीदारी रही।

श्री विश्वामित्र शास्त्री ने बसंत पंचमी पर्व की महत्ता समझाते हुए वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार से ज्ञान, शिक्षा और विद्या, तीनों के संवर्धन के सूत्रों की चर्चा की। गायत्री का तत्त्व दर्शन एवं परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के दिव्य एवं अनुकरणीय जीवनवृतांतों ने सभी को श्रद्धासिक्त, प्रेरित और उत्साहित किया। कार्यक्रम का समापन गायत्री मन्त्र-लेखन एवं सत्साहित्य के स्वाध्याय के संकल्प के साथ हुआ।

39 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

प्रज्ञा पीठ मुजगहन में बसंत पंचमी के दिन 39 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार कराया गया। इस अवसर पर श्री दिलीप नाग ने कहा कि माँ सरस्वती का अवतरण पर्व विनयपूर्वक विद्यार्जन करने तथा सार्थक जीवन जीने के लिए कुछ नया करने की प्रेरणा देता है। यज्ञ संचालन श्री मोहन गंजीर ने किया।

मुजगहन में नन्हें बच्चों का सामूहिक विद्यारंभ संस्कार

विद्यारम्भ व पुंसवन संस्कार समारोह

बोरगाँव, बैतूल। मध्य प्रदेश : माँ भगवती मंगल कार्यालय बोरगाँव (रेमण्ड) में बसंत पंचमी के पावन अवसर पर पाँच कुंडीय यज्ञ के साथ सामूहिक विद्यारंभ एवं पुसवन संस्कार संपन्न कराए गए। बच्चों के व्यक्तित्व विकास की बहुमूल्य प्रेरणाओं से युक्त यह कार्यक्रम बहुत सराहा गया।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास हेतु सक्रिय बोरगाँव की बहिनें

शान्तिकुञ्ज से प्रकाशित नई पुस्तकें

(महाशिवरात्रि, संवत् 2078 (1 मार्च 2022) के दिन प्रकाशित हो रही हैं।)

योग वासिष्ठ (तृतीय खण्ड)

निर्वाण प्रकरण (पूर्वार्द्ध)

(सरल हिन्दी भावार्थ साहित)

संपादक : परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा

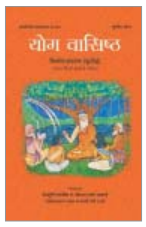

यह भारतीय दर्शन एवं अध्यात्मविद्या की अतिशय उच्च कोटि की 'अद्वैत वेदान्त' की प्रतिपादक, ज्ञान एवं कर्म का समन्वय करने वाली एक अनुपम रचना है।

विविधदेवानां विविधा गायत्री

विराट् और मानवीय अन्तःप्रकृति के बीच सहज प्रवाहित परमात्मा की प्राणधाराओं में जब दुर्बुद्धिवश रुकावटें पैदा होती हैं तो कायिक, वाचिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोग (विकार) पनपने लगते हैं तथा मानव व्याधिग्रस्त, दुःखी और अशक्त होने लगता है। गायत्री महाविद्या से इन विकारों का शमन संभव है। सहज क्रम में साधकों की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति (गायत्री महामन्त्र) से हो जाती है, लेकिन कष्ट विशेष के निवारण के लिए उससे सम्बन्धित देव-गायत्री का जप भी महा गायत्री के जप के साथ (आगे-पीछे) सम्पुट जोड़ना उपयोगी रहता है। 'विविधदेवानां विविधा गायत्री' पुस्तक इस संदर्भ में साधकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

परम पूज्य गुरुदेव भगवान नहीं तो क्या थे?

श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, जयपुर (राजस्थान जोन समन्वयक)

विवाह की 50वीं वर्षणाँठ के अवसर पर सुनाए कुछ रोमांचक संस्मरण

मैंने तो कल ही मोक्ष कर दिया

बात सन् 1987-88 की है। मेरी चाची का देहान्त हो गया था। श्मशान से उनकी अस्थियाँ चुनकर लौटते समय मैंने अपने भतीजे जगदीश से कहा, ''तू कल शान्तिकुञ्ज जाएगा। वहाँ गुरुजी से बोलना, मेरी माँ का मोक्ष करवा दो।''

जगदीश अगले दिन गुरुजी से मिला। उसने अभी इतना ही कहा था-मेरी माँ...। वह आगे कुछ बोलता उससे पहले ही गुरुदेव ने कहा बेटे! उनका तो मैंने कल ही मोक्ष करवा दिया।

श्री ओम जी अग्रवाल सपत्नीक

मन में श्रद्धा-विश्वास बनाए रखना, तेरा गुरु तुझे बहुत देगा

सन् 1980 में शक्तिपीठों की प्राण प्रतिष्ठा के क्रम में हम 15 दिन गुरुजी के साथ रहे। काँवट, वाटिका और पुष्कर की शक्तिपीठों की प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद वे काँवट होते हुए रात को खेतड़ी के गेस्ट हाउस में रुके थे। अगले दिन सुबह नहाते समय मेरे मन में विचार आया, 15 दिन गुरुजी के साथ रहे लेकिन गुरुजी ने हमसे हमारी कोई व्यक्तिगत बात तो की ही नहीं।

नहाते समय मेरे मन में यह विचार आये ही थे कि वीरेन्द्र अग्रवाल जी ने बाथरूम का दरवाजा खटखटाया, कहा, ''गुरुजी बुला रहे हैं।'' मैंने तैयार होने में दो-चार मिनट से ज्यादा देर नहीं की। सीधा गुरुदेव के पास पहुँचा और चरण स्पर्श किए।

गुरुजी बोले, ''बेटा! मेरे गुरु ने मुझे बहुत दिया है। तेरा गुरु भी तुझे बहुत देगा। बस मन में श्रद्धा-विश्वास बनाए रखना।'' इस तरह मन की बात तो केवल भगवान ही समझ सकते हैं, यह किसी मनुष्य के बस की तो बात नहीं है।

तू मेरा पाँचवा पुत्र है।

सन् 1990 के पहले की बात है। मैं शान्तिकुञ्ज आया। जैसे ही पहुँचा, एक सज्जन बुलाने आ गए। कहने लगे-आपको गुरुजी बुला रहे हैं।

गुरुजी को प्रणाम किया। उन्होंने अपने पास बिठाया, वे कहने लगे, बेटे! जैसे जमनालाल बजाज महात्मा गाँधी के पाँचवे पुत्र थे, वैसे ही तू मेरा पाँचवा पुत्र है। तेरे बेटों की, तेरे पोतों की, पर पोतों की, षड़ पोतों की सबकी जिम्मेदारी मेरी है।

गुरुदेव के यह वचन सुनने के बाद मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि स्वयं भगवान ही गुरुदेव के रूप में इस धरती पर अवतरित हुए हैं।

न्यूजीलैण्ड में आरम्भ हुई बाल संस्कारशालाएँ

ऑनलाइन स्वाध्याय, यज्ञ, संस्कार, पारिवारिक गोष्ठियाँ, सत्संग, भजन संध्या जैसे कार्यक्रमों से न्यूजीलैण्ड में युग चेतना का प्रकाश फैला रही सुश्री दीप्ति महापात्र के विशेष प्रयासों से क्राइस्टचर्च एवं हैमिल्टन में बाल संस्कारशालाएँ भी आरम्भ हो गई हैं।

क्राइस्टचर्च में बाल संस्कारशाला का शुभारम्भ दिसम्बर की छुट्टियों में हुआ। 19, 26 दिसम्बर तथा 2 जनवरी (रविवार) को लगातार 3-3 घण्टे बाल संस्कार शालाएँ चलीं। पश्चिम ओंटारियो (कनाडा) में चल रही बाल संस्कारशाला की विषयवस्तु को आधार बनाया गया। इसमें गायत्री मंत्रोच्चार, ध्यान, प्राणायाम, योग, प्रज्ञागीत, नैतिक शिक्षा और हिन्दी सीखने के अभ्यास को शामिल किया गया। दीप्ति महापात्र, दीप्ति ओझा तथा अनिल ओझा द्वारा पावर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन के माध्यम से संचालित बाल संस्कारशाला बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक सिद्ध हुई।

दीप्ति महापात्र ने इस सफलता को देखते हुए 12 फरवरी 2022 से अपने गृह नगर हैमिल्टन में भी बाल संस्कार शाला आरम्भ की। यह संस्कारशाला गीता पटेल जी और दिलीप पटेल के घर पर आरम्भ की गई है।

क्राइस्टचर्च की बाल संस्कारशाला में भाग लेते बच्चे

ऑनलाइन स्वाध्याय का उत्साहवर्धक क्रम

अखण्ड ज्योति का नियमित स्वाध्याय गायत्री परिवार न्यूजीलैण्ड की सक्रियता का सबसे प्रभावशाली कार्यक्रम रहा है। मास्टरटोन से रोशनी त्रिवेदी, ऑकलैण्ड से कृष्णा माला, संदीप पाटिल, क्राइस्टचर्च से दीप्ति एवं अनिल ओझा, हैमिल्टन से दीप्ति महापात्र, हिमानी, पेरो से जुही पटेल तथा भारत से मंजू महापात्र के साथ बहुत से परिवारी जन नियमित रूप से इस स्वाध्याय में शमिल होते हैं और अखण्ड ज्योति के विविध लेखों को पढ़कर उन पर विचार मंथन करते हैं। दीप्ति महापात्र ने बताया कि स्वाध्याय का यह क्रम दैनंदिन जीवन में सकारात्मकता, स्नेह, युग निर्माणी उत्साह बढ़ा रहा है।

विचारों की शक्ति अकूत है। संसार पर शासन मनुष्य नहीं, विचार करते हैं। - स्मिथ

मतदान हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

उत्तराखण्ड में 14 फरवरी को विधान सभा के लिए मतदान हुआ। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या, श्रद्धेया शैल जीजी सहित शान्तिकुञ्ज के लगभग सभी अंतेवासियों ने पूरी तत्परता के साथ मतदान किया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा, श्री शिवप्रसाद मिश्र जी आदि ने प्रातःकाल ही श्रद्धेय द्वय के साथ मतदान करते हुए सभी को मतदान के लिए प्रेरित किया।

मतदान कर लौटे डॉ. साहब

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने मतदान के बाद कहा कि आज सर्वत्र अधिकार की चर्चा है, लेकिन हम अपने अधिकार के प्रति सच्चा न्याय तभी कर सकते हैं जब मतदान जैसे राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करें। उन्होंने कहा कि गण (नागरिक) जागरूक होगा, तभी तंत्र (प्रशासन) चुस्त एवं समाज के लिए उत्तरदायी बनेगा। श्रद्धेय ने कहा कि मतदान हमारे विवेक की एक कठिन परीक्षा है। हमें बिना किसी लोभ, मोह और राग, द्वेष के राष्ट्रहित में ही मतदान करना चाहिए।

सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान को नमन

14 फरवरी पुलवामा आतंकी हमले की बरसी भी थी। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया जीजी सहित शान्तिकुञ्ज परिवार ने इस अवसर पर इस आतंकी हमले में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर शहीद सैनिकों का भावभरा स्मरण करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी।

उच्च कोटि की साधिका लता जी को गायत्री परिवार की श्रद्धाञ्जलि

लता दीदी का सादगीपूर्ण, तपस्वी, साधक जीवन मानवता के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत रहेगा

लता मंगेशकर जी के घर श्रद्धेय डॉ. साहब और लता जी के गाए गायत्री मंत्र की एल्बम

भारत रत्न स्वर साम्राज्ञी माननीया लता मंगेशकर जी अपने सदाबहार गीतों से सारे विश्व में विख्यात् हुईं, लेकिन अखिल विश्व गायत्री परिवार उन्हें एक उच्च कोटि की साधिका के रूप में भी हमेशा याद करेगा। संगीत ही उनका ईश्वर था। उनकी उच्च कोटि की संगीत-साधना, भक्तिभावना, श्रम के प्रति निष्ठा, कार्य के प्रति तन्मयता, दोषहीन संरचना की हूक (परफैक्शन इन वर्क) संगीत एवं अध्यात्म क्षेत्र के साधकों के लिए अनुकरणीय है।

लता दीदी का अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रति अपार स्नेह था। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से भेंट के समय उनका अविस्मरणीय स्नेह प्राप्त हुआ। इसी स्नेह के नाते उन्होंने गायत्री मंत्र, गायत्री चालीसा तथा गायत्री माता की आरती को अपने स्वर देकर न केवल गायत्री साधकों की बड़ी सेवा की है, बल्कि इन रचनाओं से स्वयं भी आत्मिक आनन्द की दिव्य अनुभूति की है, जैसा कि उन्होंने एक साक्षात्कार में स्वयं कहा है।

अपने देश, सनातन धर्म एवं कला जगत को बुलंदियों पर प्रतिष्ठित करने वाली दिव्यात्मा श्रद्धेया लता दीदी कहीं गई नहीं हैं, वे करोड़ों लोगों के हृदय में बस गई हैं। आपका सादगीपूर्ण, तपस्वी जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। स्थूल काया से ओझल हो गईं लता दीदी को पूरे अखिल विश्व गायत्री परिवार की भावभरी श्रद्धांजलि।

गायत्री मंत्र गा कर वाकई बहुत सुकून मिला

एक साक्षात्कार में

प्रश्न : आप अपने कैरियर में बेस्ट रही हैं। कुछ खास, जो दिल को छूकर गया हो?

उत्तर : दिल के करीब तो कई गाने हैं, लेकिन 'ए मेरे वतन के लोगो...' मुझे अपना माइलस्टोन लगता है। हाल ही में रिकॉर्ड किए गानों की बात कर रहे हैं तो गायत्री मंत्र का नाम लूँगी। इसे गाकर वाकई बहुत सुकून मिला।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की श्रद्धाञ्जलि

परम आदरणीया लता जी का हम सब के बीच न रहना एक अत्यंत दुःखद खबर है। वे भारत के गौरव की बात समस्त विश्व में करने वालों में से थीं। उनकी वाणी में माँ गायत्री के मंत्र व आरती का श्रवण कर गुरुसत्ता से उनकी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करते हैं। - **डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी** (अपने ट्विटर एकाउण्ट पर)

अनायास ही शान्तिकुञ्ज आ गए, फिर यहीं के हो गए

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के संग एकाकार होकर ली चिर विश्रान्ति

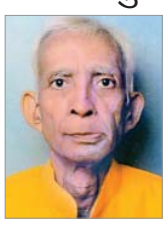

श्री मदन मोहन लाल

शांतिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्ता श्री मदन मोहन लाल 28 जनवरी 2022 को गुरुसत्ता की परम चेतना में विलीन हो गए। वे परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य से प्रेरित होकर सन् 2010 में शान्तिकुञ्ज घूमने आए थे। उसी समय यहाँ के वातावरण तथा दिनचर्या से वे इतने प्रभावित हुए कि अपना कारोबार इत्यादि सब कुछ छोड़कर सपत्नीक शांतिकुञ्ज आ गए। बांग्ला भाषा में अच्छी पकड़ होने के कारण आरंभ से ही बांग्ला विभाग में कार्यरत रहे। उन्होंने पूज्य गुरुदेव की कई पुस्तकों का बांग्ला में अनुवाद किया। बांग्ला प्रज्ञा अभियान के प्रकाशन में भी उनका बहुमूल्य योगदान रहा। स्वर्गीय श्री मदन मोहन लाल जी की तरह ही उनकी धर्मपत्नी डॉ. किरण सिन्हा भी मिशन के लिए पूरी तरह समर्पित हैं। वे इन दिनों देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

श्री चंद्रकान्त माण्डवगणे

शान्तिकुञ्ज में मराठी अखण्ड ज्योति पत्रिका और मराठी साहित्य के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले श्री चंद्रकान्त माण्डवगणे का 12 दिसम्बर 2021 को अपने मूल निवास, पूणे (महाराष्ट्र) में देहावसान हो गया।

उनका हिमालय जाकर तप करने का मन था। घर से हिमालय के लिए चल पड़े। रास्ते में रेलगाड़ी में गायत्री परिवार के कुछ परिजनों से मुलाकात हुई। उनके साथ शान्तिकुञ्ज के विषय में हुई चर्चा से इतने प्रभावित हुए कि हिमालय जाने की अपेक्षा शान्तिकुञ्ज ही आ गए। तब से वे शान्तिकुञ्ज में ही समयदान दे रहे थे।

श्री चंद्रकान्त माण्डवगणे बैंक मैनेजर थे। वे अपनी नौकरी छोड़कर सन् 2004 में ही शान्तिकुञ्ज आए थे। उनके भावविह्वल परिवार में धर्मपत्नी रोहिणी, पुत्र सिद्धार्थ एवं पुत्री देवयानी हैं।

उपरोक्त दोनों दिवंगत देवात्माओं को शान्ति, सद्गति प्राप्त हो, उनके परिवारी जनों को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, गुरुकार्य को गति देने का हौसला बना रहे, ऐसी शान्तिकुञ्ज एवं समस्त गायत्री परिवार की गुरुसत्ता से प्रार्थना, भावभरी श्रद्धांजलि।

देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञों की शृंखला पुनः प्रारम्भ

शान्तिकुञ्ज से 1 मार्च 2022 को पूरे देश में रवाना हो रही हैं टोलियाँ

विगत दिसम्बर-जनवरी से पूरे देश में आरम्भ हुई 'देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ' शृंखला को कोरोना संक्रमण के कारण बीच में ही रोक दिया गया था। अब स्थिति नियंत्रण में होने पर प्रशासनिक दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए देशव्यापी कार्यक्रमों की शृंखला पुनः आरम्भ की जा रही है। अधिकांश स्थानों पर पूर्व में ही 1 मार्च के बाद की तिथियों में दिए गए कार्यक्रमों की तिथियाँ यथावत रखी गई हैं। जनवरी-फरवरी में जो कार्यक्रम नहीं हो पाए, उन्हें नई तिथियाँ दी जा रही हैं। विस्तृत जानकारी के लिए कार्यक्रम विभाग, शान्तिकुञ्ज से (मोबाइल : 9258360605, 9258369485) सम्पर्क किया जा सकता है।

इन आयोजनों में निम्न अभियानों पर प्रमुखता से ध्यान दिया जाना चाहिए :-

1. सद्ग्रंथ स्थापना
2. गंगाजल-देव स्थापना
3. शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती डाक टिकट की स्थापना
4. अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान आदि मिशन की पत्रिकाओं के सदस्य-पाठकों में वृद्धि

शान्तिकुञ्ज में शिविर पुनः आरम्भ

01 मार्च 2022 से शान्तिकुञ्ज में शिविर भी पुनः प्रारंभ किये जा रहे हैं। अभी कोरोना संक्रमण पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। अतः आवश्यक सावधानियों को ध्यान में रखते हुए सीमित संख्या में ही साधकों को अनुमति दी जा रही है।

निम्न सत्रों हेतु ऑनलाइन आवेदन करें :

- नव दिवसीय जीवन साधना सत्र
- एक मासीय युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्र
- एक मासीय परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र

आवेदन के लिए लिंक : http://awgp.org/social_initiative/shivir/apply

उपरोक्त शिविरों में भागीदारी के लिए आवश्यक योग्यता एवं शिविर काल के अनुशासन-अनुबंधों की विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर दी गई है। कृपया उन्हें अच्छी तरह से पढ़ने-समझने के बाद ही साधनात्मक मनोभूमि वाले लोग शिविर के लिए आवेदन करें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए :

शिविर विभाग, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड) संपर्क सूत्र- 9258369749, 9258360655

बसंत पंचमी के दिन हुआ पुस्तकों का विमोचन

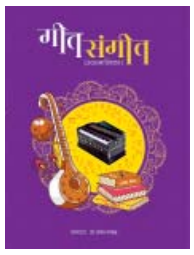

गीत-संगीत (स्वरमालिका)

स्वर लिपि के सहारे स्वयं सीखें-बजाएँ प्रज्ञा गीत

- 200 प्रज्ञागीतों की स्वर लिपि
- मातृवन्दना, गुरुवन्दना, प्रेरणा गीत, देशभक्ति के गीत, संस्कार परम्परा से सम्बन्धित गीतों का संगीत
- स्थाई एवं अंतरा दोनों की स्वर लिपि
- स्थाई एवं अंतरा के बीच बजाई जाने वाली धुन की स्वर लिपि

अन्य पुस्तकें : -

- **युगगीता, भाग-1 (अंग्रेजी में)**
  - प्रज्ञायोग साधना प्रोटोकॉल
  - देव संस्कृति विश्वविद्यालय वृक्षारोपण की एक अभिनव पहल

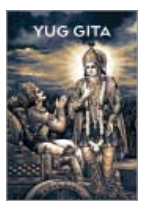

छत्तीसगढ़ी भाषा में पुस्तकें (अनुवादक-श्री पुनीत गुरुवंश, शान्तिकुंज)

1. लइका मन ले दाई-ददा के बिवहार कईसे होवै? (बालकों से माता-पिता का व्यवहार कैसा हो?)
2. आध्यात्मिक कायाकल्प के बिधि-बिधान (आध्यात्मिक कायाकल्प का विधि-विधान)
3. अध्यात्म के आधारशिला मन के साफ ले हे (अध्यात्म की आधारशिला मन की स्वच्छता)
4. अध्यात्म विज्ञानसम्मत बने अउ विज्ञान अध्यात्मपरक (अध्यात्म विज्ञानसम्मत बने एवं विज्ञान अध्यात्मपरक)
5. **छत्तीसगढ़ी ददरिया एवं लोकगीत (1000 पृष्ठ), लेखक श्री पुनीत गुरुवंश**

जड़ीबूटी उत्पाद (फार्मेसी विभाग, देसंविवि द्वारा निर्मित उत्पाद)

- च्यवनप्राश
- जीवनी शक्तिवर्धक पेय,
- इम्यूनिटी चाय,
- वातनाशक तेल,
- तालीशादि चूर्ण,
- दालचीनी चूर्ण,
- पंचसकार चूर्ण
- त्रिफला चूर्ण

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.2.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23